चन्दामामा
अक्टूबर १९६३

अक्तूबर १९६२

★

विषय - सूची

★

एक प्रति ६० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ७-२०

केवल विक्स वेपोरब ही
सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े तीनों भागों पर तुरंत असर करता है...

सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है !

विक्स वेपोरब सारी रात दो तरीकों से आपकी नाक, गले तथा छाती में असर करता है—आपकी सर्दी से हुई परेशानियों को नष्ट करता है। आप आसानी से सांस लेने लगते हैं और चैन की नींद सोते हैं।

सर्दी के लक्षण (जैसे नाक का बहना, गले की खराश, खांसी, छाती में जकड़न) दिखायी पड़ते ही तुरंत विक्स वेपोरब इस्तेमाल कीजिये। केवल विक्स वेपोरब ही सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े सभी तीनों भागों — नाक, गले तथा छाती में तुरंत असर करता है और आपको सर्दी-ज़ुकाम के सभी कष्टों में रातोंरात आराम दिलाता है। सोते समय विक्स वेपोरब नाक, गले, छाती तथा पीठ पर मलिये। तुरंत ही आप विक्स वेपोरब की गरमाहट महसूस करने लगते हैं। साथ ही साथ आपके शरीर की सामान्य गरमी से वेपोरब शीघ्र ही औषधियुक्त भाप में बदल जाता है। यह भाप सारी रात आपके हर श्वास के साथ भीतर जाती रहती है। जबकि आप चैन की नींद सोते हैं यह आश्चर्यजनक द्विविध क्रिया जहाँ सर्दी की तकलीफ सबसे ज्यादा है वहां आपकी नाक, गले तथा छाती में गहराई तक होती रहती है। सुबह तक आपका सर्दी-ज़ुकाम जाता रहता है और आप फिर से खुश और स्वस्थ हो जाते हैं।

किफायती घरेलू शीशी

प्रचलित नीली शीशी

सुविधाजनक हरी डिब्बी

विक्स वेपोरब सर्दी-ज़ुकाम से जकड़े इन तीनों भागों पर मलिये		
वेपोरब नाक के अन्दर व बाहर मलिये।	वेपोरब गले और छाती पर मलिये।	वेपोरब पूरी पीठ पर मलिये।

विक्स वेपोरब

परिवार के हर व्यक्ति के लिए—
सर्दी-ज़ुकाम को रातोंरात दूर करता है

सपना
सच्चा हुआ
साठे बिस्कुट
SBC: 187 HIN

अक्तूबर १९६३

चन्दामामा का मैं काफी पुराना पाठक हूं। इसकी रोचक सामग्रियों के लिए मैं प्रशंसक भी हूं। अगस्त अंक के पाठकों के मत में भाई विजय कुमार जोशी के विचार मुझे पसंद नहीं आये। आप चन्दामामा में चित्रों की संख्या उतनी ही रखें जितनी पहले थी या अब भी हैं। हाँ टाइप कुछ छोटा करें तो अच्छा हो। भारत का इतिहास बराबर चालू रखें। संसार के आश्चर्य भी देते रहें क्योंकि ज्ञान-वर्द्धन के लिए इन स्तम्भों से अन्य कोई स्तम्भ श्रेष्ठ न होगा।

एक बात और अगस्त अंक में संपादकीय का चित्र मुझे पसन्द नहीं आया। तलवार भाले हिंसा के प्रतीक हैं और भारत अहिंसा का पुजारी है। अतः इस चित्र को आप बदल दें तो भला हो।

परेश कुमार, केन्दुआबाजार

मैं चन्दामामा का पिछले ६ साल से पाठक हूं। तथा मेरे पास पिछले ८ साल का इसका संग्रह भी है। मेरे ख्याल में इससे अच्छी कोई भी बच्चों की पत्रिका नहीं है, इसकी छपाई, तथा फोटो बड़ी आकर्षक है, अगस्त अंक की "चाणक्य की कथा" एक शिक्षापूर्ण कहानी है और "भयंकर घाटी" "महाभारत" "गन्धर्व सम्राट की लड़की" और "रामायण" बेहतरीन धारावाहिक कहानियाँ हैं। अगर आप चन्दामामा के आगे के और पीछे के पृष्ठों में इश्तिहार न देकर कहानियाँ दें तो ज्यादा अच्छा रहेगा।

मधुकान्त शर्मा, नई दिल्ली

अगस्त '६१ का चन्दामामा अंक पढ़ा। इसमें "मनोव्याधि" "परीक्षा फल" और "कौन परोसे कौन खाये" आदि रचनायें विशेषकर रुचिकर थीं। चन्दामामा का मूल्य बढ़ गया है परन्तु पृष्ठों में कोई अधिकता नहीं हुई है।

मेरे विचार में अगर आप ने विज्ञापन समाप्त कर दें और इसके स्थान पर कहानियाँ या चुटकले आदि दे तो अच्छा रहेगा।

"भारत का इतिहास" नामक स्तम्भ इतना रुचिकर नहीं है। कृपया इसे कहानी के रूप में छापने की कोशिश करें।

प्रमोद सैदा, कपूरथला

अगस्त का अंक पढ़ा, अत्यंत पसन्द आया, वास्तव में आधुनिक समय के अनुसार यह पत्रिका भी प्रगति की ओर अग्रसित होती चली आ रही है। भारत की यह प्राचीन पत्रिका दिन प्रति दिन एक नयी साज-सज्जा एवं निरालापन लेकर आती है। इस मास का मुखपृष्ठ हमारी मातृभूमि की अनादिकालीन सभ्यता एवं इतिहास को दोहराता है। इस अंक की मनोव्याधि कहानी पढ़कर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु फिर भी सब बातों के साथ कुछ मेरे पत्रिकाओं और पूर्ण करने के लिये सुझाव हैं।

१. चित्र कम से कम ही अच्छे रहेंगे।

२. अक्षर जितने छोटे होंगे उतनी अधिक रचनायें पाठकों को पढ़ने के लिए प्राप्त होंगी।

३. कहानियों के साथ साथ कुछ कविता भी प्रकाशित होनी चाहिये।

सन्तोष कुमार, सूरजनिकेतन

LIFEBUOY
SOAP
लाइफ़बॉय
है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ !
हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

हमारे कई पाठक प्रायः लिखते हैं कि 'चन्दामामा' वे दो तीन दिन में पढ़ जाते हैं और अगले चन्दामामा के आने तक उनके पास पढ़ने को कुछ नहीं रहता। उनका सुझाव है कि हम या तो चन्दामामा के पृष्ठों में वृद्धि करें, नहीं तो इसको पाक्षिक बनायें या इस तरह के कुछ और पत्र निकालें।

यदि आप बच्चे हैं, विद्यार्थी हैं, किशोर हैं तो और भी बहुत कुछ पढ़ने को है। 'चन्दामामा' तो प्रधानतः मनोरंजनार्थ है। ज्ञान वर्धन के लिए आपको अपने अध्ययन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। यदि 'चन्दामामा' ही पढ़ते रहे तो परीक्षाओं में कैसे उत्तीर्ण होंगे?

वर्ष: १५ अक्तूबर १९६३ अंक: २
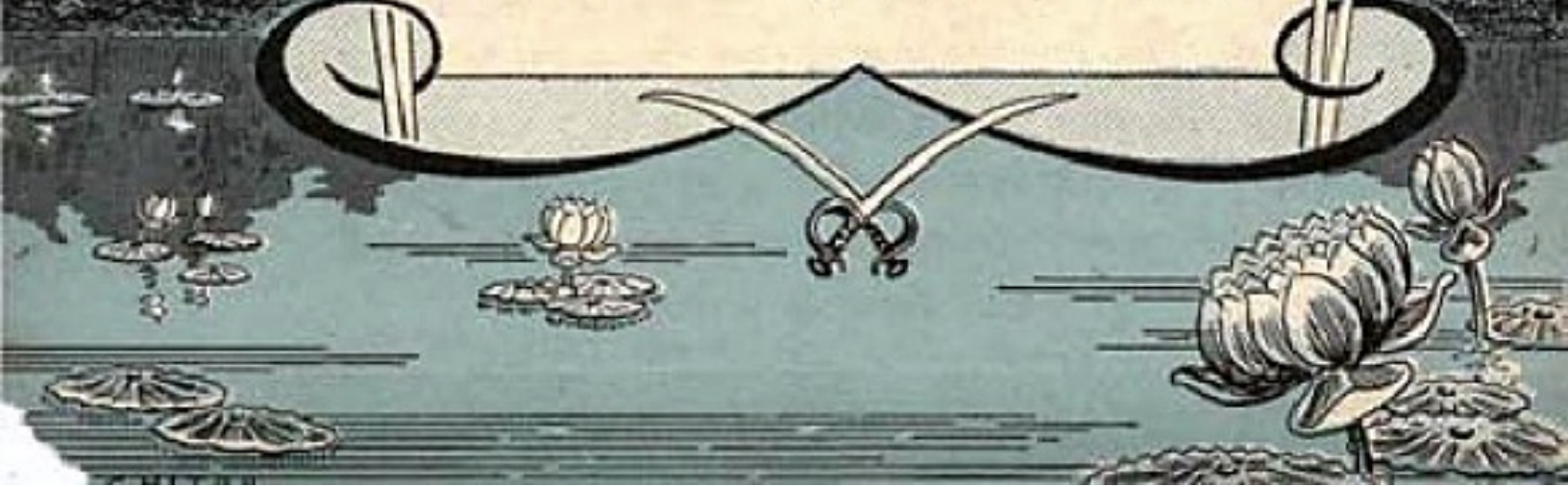
भारत का इतिहास

अलाउद्दीन का विश्वासपात्र हिजड़ा काफ़ूर, विद्रोह करने में अपने मालिक से किसी कदर कम नहीं था। अलाउद्दीन के मरते ही, वह अधिकार पाने के लिए साजिश करने लगा। सुल्तान के मरते ही काफ़ूर ने उसकी एक घोषणा को दिखलाया। या तो यह जाली घोषणा थी, नहीं तो सुल्तान पर दबाव डालकर, उससे उसपर दस्तखत करवाये गये थे। इस घोषणा के अनुसार खिज्रीखान को राज्य का अधिकार नहीं दिया गया था, परन्तु पाँच छः साल के शिहबुद्दीन को सिंहासन का अधिकारी नियुक्त किया गया था।

इस लड़के को गद्दी पर बिठाकर, स्वयं काफ़ूर निरंकुश शासन करने लगा। राज्य के लालच में उसने अनेक घोर कृत्य किये। अलाउद्दीन के बड़े लड़के खिज्रीखान और शादीखान की आँखें निकलवा दीं। राजमाता का सारा धन ले लिया और उसको कैद में डाल दिया। अलाउद्दीन के तीसरे लड़के को एक महल में नज़रबन्द कर दिया और उसकी भी आँखें निकलवानी चाहीं। परन्तु ३५ रोज़ के दुश्शासन के कारण ही काफ़ूर के दिन नज़दीक आ गये। अलाउद्दीन के पुराने नौकरों ने उसकी हत्या कर दी। तब दिल्ली के बुजुर्गों ने मुबारक को कैद से छुड़ाया और उसको उमर का राजप्रतिनिधि नियुक्त किया। मुबारक ने ६४ रोज़ राजप्रतिनिधि के तौर पर काम किया। फिर उसने अपने छोटे भाई को अन्धा कर दिया और स्वयं कुतुबुद्दीन मुबारक शा के नाम से दिल्ली के गद्दी पर बैठा। उसका राज्य कुछ दिन तो अच्छी तरह चला। उसने अपने पिता के

२४. खिल्जी वंश की अन्तिम दशा

भीष्म आदि का ही तो श्राद्ध करना चाहते हैं। परिस्थितिवश वे हमसे धन माँग रहे हैं। कभी हमने भी तो उनसे माँगा था। इसलिए धन देने के लिए तुम मान जाओ। नहीं तो तुम्हारी ही बदनामी होगी। यदि तुम्हें मेरी बात पर विश्वास न हो, तो युधिष्ठिर से पूछ देखो।"

भीम ने गुस्से में कहा—"भीष्म और द्रोण आदि के श्राद्ध के लिए तो हम धन दे सकते हैं। परन्तु अब धृतराष्ट्र को श्राद्ध करने की आवश्यकता ही क्या है! इसीलिए कि दुर्योधन आदि को अच्छे लोक मिलें। कुलनाशकों ने सारी भूमि नष्ट कर दी है। क्या तुम अपने कष्ट भूल गये हो! जब हम कष्ट भुगत रहे थे तब ये हमारे ताया क्या न थे! इनको क्या हमारी मदद नहीं करनी चाहिए थी! जब हम जुये में हार रहे थे, तो इस बूढ़े ने इस विदुर से नहीं पूछा था, क्या हमारे लोग जीत रहे हैं!"

युधिष्ठिर ने उसको डपटा—"बस काफ़ी है।" उसने विदुर से कहा—"धृतराष्ट्र को श्राद्ध के लिए जितना धन चाहिए, मैं दूँगा। भीम अपने कष्टों को याद करके कुछ का कुछ कह गया है। उसकी परवाह न करो।"

विदुर ने धृतराष्ट्र के पास जाकर, जो कुछ गुजरा था, बताया। "युधिष्ठिर और अर्जुन आवश्यक धन देने के लिए तैयार हैं। ब्राह्मणों को जो दान देने हैं, दे सकते हैं। गरीबों को अन्न आदि दे सकते हैं।"

धृतराष्ट्र यह सुनकर सन्तुष्ट हुआ। ब्राह्मणों और ऋषियों को उसने बुलाया। मृत भीष्म आदि के नाम पर वस्त्र, यान

वाहन, सोना, रत्न, मोती, वगैरह, दास और दासी, कम्बल, ग्राम, क्षेत्र, गज, अश्व, कन्या आदि, दान दिये।"

धृतराष्ट्र बड़े पैमाने पर श्राद्ध कर रहा था और युधिष्ठिर के कर्मचारी पास ही खड़ा था। क्या दिया जा रहा था, उसका हिसाब रख रहे थे। जिस किसी को, वे जो कुछ देने के लिए कहते, वह दे रहा था। दान धर्म से सब सन्तुष्ट थे।

अगले दिन धृतराष्ट्र ने पाण्डवों को बुलाया। यज्ञ किया। वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली। वल्कलवस्त्र पहिने, बन्धुजनों के साथ और गान्धारी को लेकर, वह घर से निकला। उनके साथ कौरव और पाण्डव स्त्रियाँ, पंचपाण्डव, विदुर, संजय, युयुत्सु, गौतम, धौम्य भी चले। कुन्ती अपने कन्धे पर, गान्धारी का हाथ रखकर, उसको लेकर निकली, धृतराष्ट्र, गान्धारी के कन्धे पर हाथ रखकर चल रहा था। द्रौपदी और सुभद्रा के साथ अपने लड़के को उठाकर उत्तरा भी चली। इनके पीछे नागरिक थे। सब शोक में निमग्न थे। वैसा ही दृश्य जब कि पाण्डव जुए में हारकर जा रहे थे आज फिर नगर में देखने आया। सब जगह लोग जमा थे। सब के मुँहों पर दुख था।

जब सब नगर के द्वार पर पहुँचे, तो धृतराष्ट्र ने नगर वासियों को ठहरने के लिए कहा। धृतराष्ट्र के साथ जाने के लिए विदुर और संजय को ही अनुमति मिली। युयुत्सु, कृपा और अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ युधिष्ठिर को वापिस जाने के लिए कहा। सब रुके। युधिष्ठिर ने कुन्ती से कहा—"माँ, मैं इनके साथ जा रहा हूँ। तुम स्त्रियों को लेकर अन्तःपुर जाओ।"

कुछ सख्त कानून रद्द करवा दिये। राजकीय कैदियों को छुड़वा दिया। जो ज़मीनें सुल्तान ने ली थी, उनको भी दे दीं।

परन्तु मुबारक जल्दी ही शासन कार्य भूल गया और भोग विलास में मस्त हो गया। तब के ऐतिहासिकों का कहना है कि उसके चार साल, चार मास के काल में उसको पीना, संगीत और भोग विलास के सिवाय कोई काम काम न था।

खुसरोखान नाम के एक व्यक्ति के हाथ में सुल्तान कठपुतली हो गया। यह खुसरोखान एक नीच जाति का गुजराती था, जिसने अपना धर्म बदल लिया था। उसने सुल्तान को गन्दी गन्दी आदतें सिखायीं।

यह भारत का सौभाग्य था कि मुबारक के समय में मंगोलों ने आक्रमण नहीं किया। गुजरात और देवगिरि में दो बार ही विद्रोह हुए। गुजरात के विद्रोह का दमन कर दिया गया। सुल्तान का ससुर ही वहाँ गवर्नर नियुक्त किया गया। देवगिरि पर स्वयं सुल्तान ने चढ़ाई की। देवगिरि के राजा हरपालदेव ने भागने का प्रयत्न किया, परन्तु पकड़ा गया और बुरी

मौत मरा। मलिक यकुकी देवगिरि का गवर्नर नियुक्त हुआ। इस तरह यादव राज्य सुल्तान के आधीन हो गया। सुल्तान ने खुसरोखान को तेलंगाने पर आक्रमण के लिए भेजा। वह एक साल देवगिरि में ही रहा। वहाँ उसने एक मस्जिद बनवायी और दिल्ली वापिस चला गया।

इन विजयों के कारण मुबारक को कष्ट ही हुआ। उसके वंश के कई आदमियों की हत्या कर दी गई। मुबारक ने खलीफाओं के अधिकार का भी धिक्कार किया। उसने इस्लाम धर्म का अपने को

अधिपति घोषित किया। अल्लाह का उसने अपने नाम के पीछे "अल्बासिक बिल्ला" की उपाधि भी लगाई।

सुल्तान को उसके मित्रों ने बताया भी कि खुसरो ने उसकी हत्या करवाने का प्रयत्न किया था, पर उसने उनकी न सुनी। आखिर उसको धोखा खाना पड़ा। १३२० एप्रिल मास में खुसरो के एक नौकर ने सुल्तान को छुरा भोंककर मार दिया। इसके साथ ही ३० वर्ष का खिलजियों का शासन समाप्त हो गया।

खुसरो "नासिरुद्दीन खुसरो शा" के नाम से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। उसने उन बन्धुओं को, शिकारियों को, जिन्होंने मदद की थी, ईनाम दिये। उन बुजुर्गों को जिन्होंने उसका समर्थन किया था, घूँस देने में उसने खजाना खाली कर दिया। उसने हिन्दुओं की प्रति पक्षपात किया। उसने अपने शासन के चार मास में हिन्दुओं को ऊँचे ऊँचे पदों पर नियुक्त किया। यही शायद कारण था कि ऊँचे कुल के मुसल्मानों को खुसरो का यह रुख पसन्द न आया। उन्होंने गाज़ी मलिक के नेतृत्व में सुल्तान को पदच्युत करने की ठानी। गाज़ी मलिक दीपालपुर से आया। सितम्बर ५, १३२० को दिल्ली के पास उसने सुल्तान को हराया। खुसरो का सिर काट दिया गया। उसके कुछ साथी मारे गये और जो बच गये, वे भाग निकले। गाज़ी मलिक ने सुल्तान बनने की ख्वाईश न दिखाई। परन्तु दिल्ली के नागरिकों की इच्छा पर घियासुद्दीन तुगल्क नाम से १३२० सेप्टेम्बर में वह दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ।

महाभारत

धृतराष्ट्र के आश्रमवास के लिए आवश्यक व्यवस्था करने की युधिष्ठिर ने आज्ञा दी। इसकी खबर शीघ्र ही हस्तिनापुर में फैल गई। नगरवासी, राजमहल के बाहर झुन्डों में जमा हो गये।

तब धृतराष्ट्र, गान्धारी के साथ बाहर आया। उसने प्रजा को सम्बोधित करके कहा—"मैं और गान्धारी वन में जा रहे हैं। वानप्रस्थ ले रहे हैं। व्यास और युधिष्ठिर ने हमें इसकी अनुमति दे दी है। आशा है कि आप भी हमें इसकी अनुमति देंगे। आपका और हमारा अन्योन्य सम्बन्ध शाश्वत है। मैं वार्धक्य और पुत्रों के निधन से दुर्बल हूँ। राज्य का भार युधिष्ठिर पर डालकर, अपना उत्तरदायित्व कम करना चाहता हूँ। मुझे विश्वास है कि दुर्योधन के शासन से युधिष्ठिर का शासन अच्छा होगा। इस स्थिति में मेरे लिए वानप्रस्थ के अतिरिक्त कोई और मार्ग नहीं है। आप मुझे इसकी अनुमति दीजिये।"

यह सुनकर लोगों ने तरह तरह की बातें कहीं। धृतराष्ट्र ने उनसे कहा—"इस देश पर शान्तनु ने राज्य किया। भीष्म और विचित्रवीर्य ने राज्य किया। हमारे भाई पाण्डु ने राज्य किया। मैंने भी कुछ शासन किया। यदि हमसे कोई गल्ती हो, तो क्षमा कीजिये। दुर्योधन ने निरंकुश राज्य किया। अहंकारी हो गया। उसके कारण क्षत्रियों में फूट हुई। इसमें मेरी गलती भी कुछ हो सकती है, आप उसे भूल जाइये। अब कौरवों का

राजा भी युधिष्ठिर ही है। उसके चारों भाई मन्त्रियों के तौर पर उसकी मदद कर रहे हैं। उसे आपको और आपको उसे सौंप रहा हूँ। हमारे लड़कों की गल्तियाँ माफ़ करने के लिए मैं और गान्धारी प्रार्थना करते हैं। हमें जाने दीजिये। आप सबको नमस्कार।

यह सुन लोग, अपने दुख को काबू में न रख सके। कुछ देर बाद, उन्होंने एक ब्राह्मण को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। उस ब्राह्मण ने धृतराष्ट्र से कहा—

"राजा, मैं प्रजा की ओर से यही कहना चाहता हूँ कि आपके पूर्वजों ने हम पर अच्छी तरह प्रेम से शासन किया। आपने मित्र की तरह हम पर राज्य किया। आपके दुर्योधन ने भी हमारा कोई अपकार नहीं किया। व्यास महर्षि के परामर्श को अवश्य कार्यान्वित कीजिये। परन्तु आपका वियोग हमें बहुत समय तक दुख पहुँचाता रहेगा। पाण्डव भी अच्छे हैं। उनसे हमें कोई बाधा नहीं पहुँचेगी, हम यही चाहते हैं कि युधिष्ठिर हजारों वर्ष राज्य करें।"

गान्धारी, धृतराष्ट्र प्रजा से विदा लेकर अन्तःपुर में वापिस चले गये। रात गुज़री, अगले दिन धृतराष्ट्र के कहने पर विदुर युधिष्ठिर के पास आया। "धृतराष्ट्र ने इस कार्तिक मास में वानप्रस्थ लेने का निश्चय किया है। वे भीष्म, द्रोण, अपने लड़कों, सैन्धव और अन्य मित्रों का श्राद्ध करना चाहते हैं। उनको कुछ धन की आवश्यकता है।" उसने कहा।

धन देने के लिए युधिष्ठिर और अर्जुन तो मान गये। परन्तु भीम ने आपत्ति की। अर्जुन ने भीम से कहा—"ये

भयंकर घाटी

[२७]

[केशव और उसके साथी अंगारे उगलनेवाले शेर की गुफा में गये। उनको पत्थर की गदा दिखाई दी। जब शेर ने हमला किया, तो जंगली गोमान्ना ने उसको गेंद से मारा। वह गुफा छोड़कर, पंखवाले मनुष्यों के प्रदेश की ओर भागा। वहीं ब्रह्मदण्डी भी था। ब्रह्मदण्डी हूँ फट करता, चिल्लाने लगा। बाद में—]

ब्रह्मदण्डी के चिल्लाने और पंखवाले मनुष्यों के शोर से मैदान गूँज उठा। परन्तु अंगारे उगलनेवाला शेर पास के जंगल में सीधा भागा।

ब्रह्मदण्डी जान गया कि शेर बुरी तरह डर गया था और इसलिए ही जंगल की ओर भागा जा रहा था।

फिर उसने मन्त्रदण्ड को शेर की ओर दिखाकर घुमाते हुए कहा—"जय कालभैरव फट, घट हूँ। शेर के कान पकड़कर जंगल में ले जाओ। उपासकों के वटवृक्ष, फिर वह ज़ोर से चिल्लाया जित, शक्ति, तुम कहाँ हो! आओ, आओ, भय नहीं है। शेर जंगल में चला गया है।" उसने यों अपने अंगरक्षकों को बुलाया।

मान्त्रिक की पुकार सुनकर, जित और शक्तिवर्मा ने पेड़ों के पीछे से मुड़कर देखा कि अंगारे उगलनेवाला शेर भाग

रहा था। वे तल्वारें घुमाते चिल्लाये—"ऊँ, आ रहे हैं, आ रहे हैं ब्रह्मदण्डी, शेर हमारी तल्वारों से बचकर निकल गया है। क्या जंगल में घुसकर हम उसका शिकार करें! जल्दी बताओ।"

ब्रह्मदण्डी ने जोर से हँसते हुए पूछा—"क्या मैं तुम्हारी बहादुरी नहीं जानता हूँ। लेकिन जंगल में जाकर इस समय शेर का शिकार करना ठीक नहीं है। पहिले पंखवाले मनुष्यों को ढ़ाढ़स देकर जमा करो। वह गिद्ध के चेहरेवाला उनका बूढ़ा सरदार कहाँ है! उसे तुरत यहाँ बुलाकर लाओ। नहीं तो जहाँ वह है, वहाँ मैं ही जाऊँगा। मेरा सन्देह ठीक निकला, समझ लो कि अब हमें केशव मिल गया है।"

केशव का नाम सुनते ही जितवर्मा और शक्तिवर्मा चौंके। चारों ओर देखते वे चिल्लाये—"केशव....! कहाँ है!" ब्रह्मदण्डी की ओर उन्होंने सन्देह भरी दृष्टि से देखा।

ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने बिना झिझके कहा—"जित और शक्ति तुम जल्दी न करो। वह यहीं कहीं अपने साथियों के साथ घूम रहा है। हमें होशियारी से चलकर उनको पकड़ना होगा। पहिले जो मैं कहूँ, वह करो।"

जब जितवर्मा और शक्तिवर्मा बूढ़े को ढूँढ़ते ढूँढ़ते पहुँचे, तो पंखवाले मनुष्यों का सरदार अपने आदमियों को एक जगह जमा करके डाँट डपट रहा था। क्योंकि शेर को देखकर, वे घबराकर अन्धाधुन्ध भाग गये थे।

"हमारा गरुड़ वंश है, हमारी शक्ति की कोई बराबरी नहीं कर सकता। सिवाय हमारे वंशवालों के आकाश में

पक्षियों की तरह उड़ने वाले और कहाँ हैं? तुम्हें, उस अंगारे उगलनेवाले शेर पर मंडराना था और उसको जिस तरह गरुड़ सर्प को खा जाता है, उस तरह खा जाना चाहिए था। वह तो किया नहीं और डरपोक की तरह भाग आये!"

जित और शक्ति ने उनके पास आकर बताया कि ब्रह्मदण्डी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। ब्रह्मदण्डी का नाम सुनते ही पंखवाले मनुष्यों के सरदार का मुँह लाल लाल-सा हो गया। "अब मुझे तुम्हारे ब्रह्मदण्डी पर अविश्वास हो रहा है। वह कहता था कि अपनी मन्त्रशक्ति से हर चीज़ को भस्म कर सकता था। पर उसने शेर को क्यों नहीं भस्म किया? वह जंगल में भाग गया है, पर किसी भी समय वह आ सकता है और हमारे व्यायाम प्रदर्शन को भंग कर सकता है।"

जित और शक्तिवर्मा ने झुक झुककर प्रणाम करते हुए कहा—"इस अंगारे उगलनेवाले शेर से भी भयंकर आदमियों से हम पर आपत्ति आनेवाली है।"

पंखवाले मनुष्यों के सरदार ने चेहरे पर लगाये हुए गिद्ध के मुखौट को हटाया और पूछा—"हम पर आपत्ति आनेवाली है! किनसे! बीड़ाली और श्वानकर्णी के गिरोह मिलकर हम पर आक्रमण तो नहीं करनेवाले हैं!" कुछ घबराते हुए उसने कहा।

"वे सब बातें, तो हम नहीं जानते हैं। आप एक बार आइए। सब कुछ ब्रह्मदण्डी ही बतायेंगे।" जित और शक्तिवर्मा ने बताया।

पंखवाले मनुष्यों का सरदार ब्रह्मदण्डी से मिलने निकला। उसको आता देखा, ब्रह्मदण्डी उस पत्थर से उठा, जिस पर

वह बैठा था। "गरुड़ राजा हम पर कृपा करो, कृपा करो।"

"गरुड़ राजा" का नाम सुनते ही, पंखवाले मनुष्यों का सरदार खुश हुआ। ब्रह्मदण्डी के पास कुछ कुछ उड़ते हुए आया। मुस्कराते हुए उसने पूछा—"ब्रह्मदण्डी, हम पर क्या आपत्ति आनेवाली है। तुम्हें देखकर तो ऐसा लगता है, जैसे कोई आपत्ति आने ही वाली न हो।"

"आपत्ति! आपत्ति तो क्या हमारा भाग्य खिलनेवाला है। वे लोग, जिन्होंने तुम्हारे आदमियों से उन लोगों को छुड़ाया था, जिनको तुम्हारे देवता के लिए बलि दिया जाना था इस पहाड़ की गुफ़ाओं में कहीं छुपे हुए हैं। मुझे अब इसका पूरा विश्वास हो गया है। अंगारे उगलनेवाले शेर को देख, बिना आगे पीछे देखे, हमारे लोग भाग गये हैं, इससे यही अनुमान किया जा सकता है किसी दुष्ट ने उसको खदेड़कर मारने की कोशिश की थी। तुमने यह नहीं सोचा!" ब्रह्मदण्डी ने सोत्साह कहा।

ब्रह्मदण्डी के यह कहते ही गरुड़ राजा ने कहा—"केशव और उसके साथी, और क्या चाहिए! हमें आधा राज्य और तुम्हें भयंकर घाटी का सोना चान्दी। चलो अभी जाकर उन्हें ढूंढे।"

ब्रह्मदण्डी जब कभी आफत में फँसता, तो अपने पकड़नेवाले को आधा राज्य दिलवाने का वादा करता। चण्डमण्डूक के चुंगल से निकलने के लिए यही वादा किया था। फिर पंखवाले मनुष्यों के सरदार के हाथ में पड़कर, उसको भी उसने यही वादा किया था। चण्डमण्डूक के नरमांस भक्षकों से उस स्थूलकाय को

यह सोचकर छुड़ा दिया था कि वह गुलामों का मालिक उसके साथ मिलकर काम कर सकेगा, उसको साथ ले आया था।

गरुड़ राजा की जल्दबाजी को देख, ब्रह्मदण्डी मान्त्रिक ने मुँह सिकोड़कर कहा—"गरुड़ राजा! यह उछलने कूदने का समय नहीं है। केशव और उसके साथी जयमल्ल और जंगली युवक बड़े चालाक हैं। यदि हम गुफ़ाओं में घुसे तो वे हमसे बचकर भाग सकते हैं। हमें कुछ ऐसा करना है, ताकि वे गुफ़ायें छोड़कर चले आयें। तब हम उन्हें पकड़ सकते हैं।"

"यह कैसे हो सकता है? तुम्हारे कहने से तो ऐसा लगता है कि वे कोई मामूली आदमी नहीं हैं।" गरुड़ राजा ने सोचते हुए कहा।

"उनकी चालाकी को, कालभैरव की करुणा से मैं वश में कर लूँगा। उसके लिए वह स्थूलकाय गुलामों का मालिक है न! उसकी मदद की जरूरत है। उसको बुलाइये।"

गरुड़ राजा ने अपने नौकरों को स्थूलकाय को बुलाकर लाने के लिए

कहा। इस बीच ब्रह्मदण्डी और उसके अंगरक्षक जित और शक्तिवर्मा कुछ दूर गये। पेड़ों के पास के एक झोंपड़े के पास खड़े हुए।

"तुम्हारा क्या जाता है ब्रह्मदण्डी! फिर कोई आफ़त सिर पर मोल ले रहे हो? उस स्थूलकाय को क्या काम सौंपने जा रहे हो?"

"तुम अपने बेहूदे प्रश्नों से मुझे तंग न करो। उस गुलामों के मालिक को, मैंने नरभक्षकों से बचाया था। इस वजह से उसे मेरा गुलाम ही समझो। जैसे मैं

चाहूँगा, वैसे मैं उसका उपयोग करूँगा।" ब्रह्मदण्डी ने खिझकर कहा।

"वह तुम्हारा गुलाम कैसे हो सकता है? तुमने उसको वादा किया था कि उसको आधा राज्य दोगे!" शक्तिवर्मा ने कहा।

"मैंने कभी वादा नहीं किया था, कि मैं उसको आधा राज्य दूँगा। मैंने सिर्फ इतना ही कहा था कि मेरे आधे राज्य में वह जिसको चाहे, उसको पकड़कर गुलाम बना सकता है।" ब्रह्मदण्डी ने गुस्से में कहा।

इतने में गरुड़ राजा ने उनके पास आकर पूछा—"लगता है। तुम आपस में लड़ रहे हो?"

ब्रह्मदण्डी ने उसकी ओर मुड़कर मुस्कराते हुए कहा—"लड़ तो नहीं रहे हैं। हमारे अंगरक्षक स्वयं गुफाओं में जाकर केशव और उसके साथियों को पकड़ना चाहते हैं। मैं उनको समझा रहा था कि ऐसी जल्दबाजी ठीक नहीं है।"

इसके दो तीन मिनट बाद स्थूलकाय पंखोंवाले मनुष्यों के साथ ब्रह्मदण्डी के पास आया। "क्यों महामान्त्रिक! मुझसे क्या काम है?" कहकर उसने कन्धे का चाबुक हाथ में ले लिया।

ब्रह्मदण्डी स्थूलकाय को कुछ दूर ले गया और उसके कान में कुछ कहने लगा। पहिले तो उसको देखकर लगा, जैसे वह मान्त्रिक की बात सुनकर डर गया हो। फिर उसके मुँह से लगा, जैसे वह सन्तुष्ट हो गया हो। चाबुक फटफटाया, मूँछों पर ताव दी और फिर जोर से गुर्राया।

ब्रह्मदण्डी ने गरुड़ राजा के पास आकर कहा—"गरुड़ नरेन्द्रा, केशव अब हमारे

हाथ में ही समझिये। वह हम से बचकर निकल नहीं सकता। आप और आपके कुछ साथी, हमारे साथ उस पहाड़ी के पास आइये। स्थूलकाय एक नाटक खेलनेवाला है। वह क्या करेगा? ये सब बातें न पूछिये।"

तुरत गरुड़ राजा, चार पाँच साथियों के साथ पहाड़ी प्रदेश में पहुँचा। व्रमदण्डी जित और शक्ति उसके पीछे पीछे चले। स्थूलकाय चाबुक घुमाता, उनके पीछे से आगे गया। एक पत्थर पर चढ़ गया।

जब व्रमदण्डी पास आया तो उसने चाबुक इस तरह घुमाया जैसे उन्हें मारने जा रहे हो। "व्रमदण्डी, जित, शक्ति और और गरुड़ राजा, अब तुम मेरे हाथ से नहीं निकल सकते। तुम सबको मैं उस केशव को बेच दूँगा। वह तुम्हारी बोटी बोटी कटवा देगा। तुम्हारे मरते ही, निर्विघ्न केशव उस भयंकर घाटी में जायेगा और वहाँ की धन दौलत उठा ले आयेगा। मैं उसके साथ जाऊँगा।" वह इस तरह जोर से चिल्लाने लगा कि पहाड़ ही गूँजने लगे।

गुफा के छिद्र में से केशव जयमल्ल जंगली गोमान्ग यह सब देख रहे थे। उन्हें आश्चर्य हुआ। महाक्रूर स्थूलकाय स्वयं तो जीवित था ही और तो और उसने ब्रह्मदण्डी और उसके साथियों को भी गुलाम बना लिया था। यह देख, उनको अपनी आखों पर ही विश्वास न हुआ।

"केशव! ज़रूर इसमें कोई धोखा है।" जयमल्ल ने कहा। केशव कुछ कहने ही वाला था कि स्थूलकाय फिर चाबुक जोर से घुमाकर चिल्लाया। "अब तुम सब जाओ। ब्रह्मदण्डी, खबरदार, अगर तुम झोंपड़ी से बाहर गये, तो तुम सबको मरवा दूँगा।" इसके बाद केशव ने ब्रह्मदण्डी और लोगों को जाते देखा। परन्तु स्थूलकाय पत्थर पर खड़ा खड़ा, मूँछों पर ताव देता चाबुक घुमा रहा था।

"मल्ल! यही हमारे लिए अच्छा मौका है। स्थूलकाय को पकड़कर मालूम करेंगे कि असल में बात क्या है। यदि कहीं ब्रह्मदण्डी पंखवाले मनुष्यों ने हम पर हमला किया तो हम इस गुफा में भाग आयेंगे और बिना किसी को दीखे चम्पत हो जायेंगे।" कहकर केशव छेद में से बाहर निकला और रेंगता रेंगता उस पत्थर के पास पहुँचा, जहाँ स्थूलकाय खड़ा था। जयमल्ल ने उसे खबरदार करना चाहा। पर तब तक केशव चार पाँच गज़ दूर जा चुका था। अब वे कुछ कर नहीं सकते थे। जयमल्ल और जंगली गोमान्ग भी उसके पीछे पीछे चले।

[अभी है]

हृदय परिवर्तन

विक्रमार्कने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतार कर कन्धे पर डाल, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम असम्भव काम करने की धुन में बहुत मेहनत कर रहे हो। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए एक छोटी-सी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यों कहानी सुनानी शुरू की।

किसी जमाने में उज्जयनी पर वीरसिंह का राज्य था। वह होने को तो बड़ा वीर था पर शासन में उसको बिल्कुल दिलचस्पी न थी। इसलिये राज्य का भार मन्त्रियों और कर्मचारियों पर छोड़कर वह निश्चिन्त हो, समय व्यतीत कर रहा था।

बेताल कथाएँ
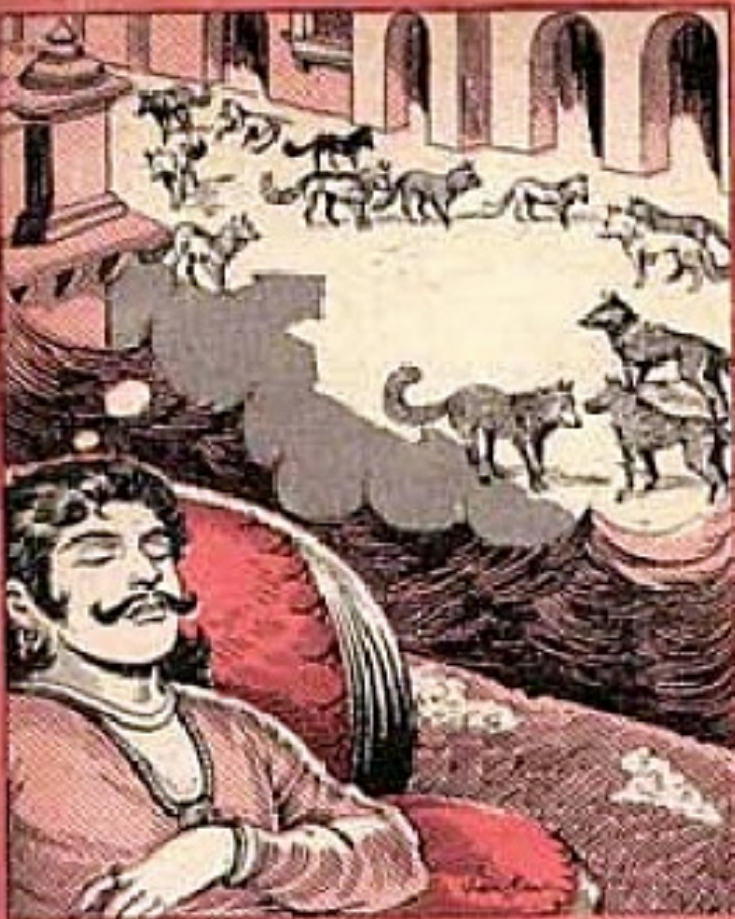
वीरसिंह को एक दिन रात को विचित्र सपना आया। सपने में उसको नगर की वीथियाँ दिखाई दीं। उस में मनुष्यों की जगह लोमड़ियाँ घूम रही थीं। इस सपने के बारे में उसने सोचा, पर उसको इसका अर्थ समझ में न आया। उसने अपने मन्त्रियों, राज पंडितों और ज्योतिषियों से इसका अर्थ पूछा। जिसको जैसा सूझा उसने वैसा बताया। राजा को सन्तोष न हुआ। उसने घोषणा करवायी कि जो कोई उसके सपने का अर्थ बतायेगा, उसको अच्छा ईनाम दिया जायेगा।

उज्जयिनी के पास ही, सगर नाम का एक बड़ा गरीब आदमी रहा करता था। वह रोज जंगल जाता, लकड़ियाँ काटता, उनको बेचकर अपना जीवन निर्वाह करता। सगर जब, रोज की तरह जंगल में गया, तो वर्षा हुई। वह एक पेड़ के नीचे खड़ा खड़ा सोचने लगा कि उसको, पत्नी और बच्चों को उस दिन भूखा ही रहना होगा। सगर जब वर्षा को कोसता दुख में खड़ा था, तो कहीं से यह प्रश्न सुनाई दिया "कौन हो तुम!" जब उसने चकित हो, चारों ओर देखा, तो एक साँप दिखाई दिया। उसने सगर कीओर देखा, मनुष्यों की भाषा में पूछा—"क्यों दुखी हो रहे हो!"

सगर ने, उस साँप को अपनी कहानी सुनाई। "इस वर्षा के कारण आज मुझे सूखी लकड़ियाँ नहीं मिलेंगी। आज मुझे, मेरी पत्नी और बच्चों को भूखा रहना पड़ेगा। दुखी नहीं होऊँगा, तो क्या होऊँगा!" उसने साँप से कहा।

"मैं तुम्हें एक ऐसा उपाय बताऊँगा, ताकि तुम्हें बहुत-सा धन मिले, उसमें से क्या तुम आधा मुझे लाकर दोगे!" साँप ने पूछा।

सगर ने सन्तुष्ट हो कर साँप से पूछा—"क्या है वह उपाय?"

"राजा को सपना आया है कि सारे शहर में लोमड़ियाँ घूम फिर रही हैं। उस सपने का कोई अर्थ नहीं बता सका है। उन्होंने एलान भी करवाया है, कि जो कोई सपने का अर्थ बतायेगा उसको अच्छा ईनाम दिया जायेगा। परन्तु तो भी कोई कुछ न बता सका। इस सपने का क्या अर्थ है, मैं बताता हूँ। तुम जाकर राजा को अर्थ बताओ। ईनाम पाकर, साँप ने कहा। आधा मुझे दो।"

"जरूर दूँगा। राजा के सपने का क्या अर्थ है?" सगर ने पूछा।

"सुनो। राजा होने को तो पराक्रमी है, पर उसे शासन आदि में कोई दिलचस्पी नहीं है। न शासन करना ही आता जाता है। इसलिए उसने शासन के सब कार्यों को मंत्रियों पर छोड़ दिया है। बहुत समय से ये मन्त्री, बिना राजा के भय के अष्टाचार कर रहे थे। अपने अधिकारों का दुर्विनियोग कर रहे थे। आखिर यह अनैतिकता लोगों में भी फैली। किसी में न धर्म रह गया है, न नैतिकता, न राज्य ही रह गया है। इसलिये नगर वीथियों में, राजा को मनुष्यों की जगह लोमड़ियाँ दिखाई दी थीं।" साँप ने कहा।

सगर ने, जो कुछ साँप ने कहा था, राजा के पास आकर कहा। "महाराज, अपने जो सपना देखा है, उसका मैं अर्थ बताता हूँ।" राजा ने बताने के लिए कहा। जो कुछ साँपने बताया था, राजा को बताया। राजा ने सब सोचा विचारा, तो सगर की बात बिल्कुल ठीक निकली। उसने सगर को अच्छा ईनाम दिया। ईनाम पाकर, सगर की गरीबी जाती रही।

"यदि यह सारा धन रख लिया, तो मेरा परिवार, सुख से जीवित रहेगा। इस में साँप को क्यों आधा दिया जाय? साँप मेरे दिये हुये धन से क्या करेगा? अब मुझे भी उससे कोई काम नहीं है।" यह सोच सगर ने अपने वचन का अनुसार ईनाम का आधा भाग साँप को ले जाकर नहीं दिया।

इस बीच राजा ने घूँसखोर अनैतिक लोगों को पद पर से हटा दिया और उनकी जगह नये लोगों को नियुक्त किया। वह स्वयं राज्य आदि का कार्य देखने लगा।

कुछ दिनों बाद राजा को एक और सपना आया। सपने में एक बड़ी तल्वार ही दिखाई दी। यह सपना भी राजा न समझ सका। इसलिये उसने सगर के पास आदमी भेजा। और उससे पूछा कि उसके सपने का क्या अर्थ था?

सगर पर तो मानों बिजली गिर गई। फिर उसे साँप की शरण में आने की सूझी। साँप से उसने जैसे तैसे क्षमा माँगने की सोची।

उसने राजा के आदमी से कहा—"मैं अभी अभी आता हूँ। तुम जाओ।"

और वह उसके पीछे भी जंगल में उस जगह गया, जहाँ उसे साँप दिखाई दिया था।

उसी समय, साँप ने अपने बिल में से बाहर आकर, सगर को देखकर पूछा—"क्यों फिर आये हो?"

"राजा को फिर एक सपना आया है। उसका मतलब यदि मैंने बताया, तो उसके लिए भी वे ईनाम देंगे। पिछली बार का, और इस बार का मिलाकर, तुम्हारा ईनाम का हिस्सा मैं दे दूँगा। कृपा करके मुझे इस सपने का अर्थ बताओ।"

"राजा को सपने में बड़ी तल्वार दिखाई दी है। इसका अर्थ बताना है, सुनो, राजा ने अपने घूँसखोर कर्मचारियों को पद पर से हटा तो दिया है, पर उनको दण्ड नहीं दिया है। वे सब राजा के विरुद्ध षड्यन्त्र करके, पास के राजाओं से मिल मिलाकर युद्ध करने की सोच रहे हैं। ये राजा यकायक कभी हमला करेंगे। जो जो अपने पद खो बैठे हैं, वे सब शत्रु राजाओं की मदद कर रहे हैं। यह ही राजा के सपने का अर्थ है।" साँप ने कहा।

इस बीच सगर अपना ईनाम लेकर सीधे घर गया, यह सोच कि साँप को उसका हिस्सा देना जरूरी न था। यदि वह अपने हिस्से के लिए आया, तो उसको मार देने का सगर ने निश्चय किया।

सगर वहाँ से सीधे राजा के पास गया। "महाराज, आपको सपने में बड़ी तल्वार दिखाई दी थी न! उसका अर्थ यह है।" जो कुछ साँप ने बताया था, वह सब राजा को बताया।

इस बार भी राजा को आश्चर्य हुआ कि सगर उसके सपने का अर्थ समझ गया था। उसने और भी अधिक ईनाम उसको दिया। तुरत उसने उन कर्मचारियों को जेल में डल्वा दिया। सेना को लेकर, उसने शत्रु राजाओं पर आक्रमण किया और उनके राज्य को भी अपने वश में कर लिया।

युद्ध के बाद, राजा को फिर एक सपना आया। उसको सपने में हरे चरागाह और उसमें गौव्वों का झुन्ड चरता दिखाई दिया। उसने फिर सगर को बुल्वाया।

यह सुनते ही कि राजा को फिर सपना आया था, सगर के हाथ पैर ठंडे ही गये। वह हमेशा सोचता कि साँप से उसका काम हो गया था। पर हमेशा उससे काम आ पड़ता। यदि राजा से उसने सच कहा तो, हो सकता है कि वह दिये हुए ईनाम वापिस ले ले। दो बार का, उसका हिस्सा मारकर, सगर को साँप का मुँह देखने का हौसला न हुआ।

पर वह कर भी क्या सकता था! उसने राजा के आदमी को भेज दिया। वह स्वयं जंगल में साँप के बिल के पास गया। साँप बिल से बाहर आया और

उसने उससे पूछा कि वह किस काम पर आया था।

"मुझे पहिले ही आना चाहिए था और ईनाम का हिस्सा दे देना चाहिए था। ऐसा न किया, मुझे इसके लिए माफ़ करो।" अब मुझे फिर तुम्हारी मदद की अवश्यकता है। राजा ने फिर सपने के बारे में खबर भेजी है। फिर वे ईनाम देंगे। तीनों ईनामों का तुम्हारा हिस्सा तुम्हें दे दूँगा। कृपा करके राजा के सपने का अर्थ समझाओ।" सगर ने कहा।

"राजा को सपने में चरागाह और गौवें दिखाई दी हैं। देश में सुख-शान्ति है। धर्म चारों पैरों पर खड़ा है।" यह कह साँप अपने बिल में चला गया।

सगर राजा के पास गया। उसने उसके सपने का अर्थ उसे समझा दिया। राजा ने खुश होकर सगर को पहिले से अधिक ईनाम ही नहीं दिया, बल्कि उसको अपने यहाँ एक छोटी मोटी नौकरी भी दी।

सगर इस ईनाम को लेकर सीधे जंगल में गया। इस बार उसे साँप नहीं दिखाई दिया। जब सगर ने बुलाया, तो बिल से बाहर आया। उसने पूछा—"इस बार क्यों आये हो?"

"यह लो राजा का ईनाम। यह तुम्हारे हिस्से से अधिक है। सब तुम ही ले लो। तुम्हारा उपकार कभी न भूलूँगा।" सगर ने कहा।

साँप ने वह ईनाम न लिया। "इस ईनाम को भी तुम ही रखो।" कहकर वह अपने बिल में चला गया।

बेताल ने यह कथा सुनाकर कहा—"राजा, मुझे एक सन्देह है। वह सगर

जिसने दो बार साँप को उसका हिस्सा नहीं दिया था, एक बार उसको मारने तक तैयार हो गया था, उसने तीसरी बार साँप को क्यों हिस्सा दिया? साँप ने वह हिस्सा लेने से क्यों इनकार कर दिया। क्योंकि उसने पहिले दो बार नहीं दिया था, इसलिए क्या साँप उस पर नाराज हो गया था? यदि तुमने इस सन्देह का जान बूझकर समाधान न किया, तो तुम्हारा सिर टूट जायेगा।

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"वह तो साफ़ ही है कि साँप सगर पर नाराज नहीं हुआ था। यदि वह नाराज होता, तो पहिली और दूसरी बार मदद ही नहीं करता। सगर ने यदि पहिली बार और दूसरी बार हिस्सा नहीं दिया था, तो इसका कारण भी साफ़ साफ़ दिखाई दे रहा है। जब पहिली बार साँप से, उसको राजा के सपने का अर्थ माल्स हुआ था, तो लोगों में शृगाल मनोवृत्ति ही थी। वह भी उस मनोवृत्ति का था। इसलिए उसने साँप को उसका हिस्सा नहीं दिया। जब दूसरी बार साँप से उसने राजा के सपने का अर्थ जाना तब लोगों में विद्रोह की भावना, दुष्ट स्वभाव प्रचलित था। इसलिए सगर ने साँप को मार देना चाहा था। जब राजा को तीसरा सपना आया, तो देश में सुख-शान्ति थी। प्रजा में चिन्ता न थी। भविष्य के बारे में भय भी न था। इसलिए सगर ने साँप को उसके हिस्से से भी अधिक देना चाहा।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही। बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

तीन कष्ट

एक बार एक खरगोश एकान्त में बैठा अपने आप यों कहने लगा :—

"प्राणी को तीन प्रकार के कष्ट होते हैं। पहिले प्राकृतिक कष्ट....भूचाल, तूफान आदि। दूसरे तात्कालिक कष्ट....अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अकाल आदि। तीसरे मानवों के कारण....शिकारियों के कारण, चोरों के कारण।

खरगोश की ये बातें एक चारवाक पक्षी, एक केंचुवे, एक बन्दर ने सुने। वे डरने लगे।

"यदि आकाश टूटकर मुझ पर गिरा तो मैं क्या करूँगा। अगर अब जगा हुआ हूँ, तब गिरे तो कोई बात नहीं, अब सो रहा हूँगा, तब गिरा तो चटनी हो जाऊँगा।" तब से चारवाक ने पैर ऊँचे करके सोने की आदत बना ली।

"अकाल आये और मुझे खाने के लिए मिट्टी भी न मिले तो मेरा क्या होगा!" यह सोच, केंचुवे, खायी मिट्टी के करने लगे।

पेड़ पर सोनेवाले बन्दर यह सोच कि उसकी सम्पत्ति भूमि कोई चुरा न ले जाये, इसलिए वह दो तीन बार पेड़ से उतरकर भूमि को देखने लगा।

हरि-कथा

भीम की पत्नी, महालक्ष्मी गर्भवती हुई और उसने एक लड़के को जन्म दिया। सारे शहर में खुशियाँ मनाई गईं कि जमीन्दार के पोता हुआ था। भीम की खुशी की तो हद न थी। वह कभी इधर जाता, कभी उधर, बच्चे को देखकर वह फूला न समाया।

एक दिन बच्चा प्रसव कक्ष में यूँ ही रोने लगा। इतने में भीम को एक बात याद आयी। यदि बच्चे यूँ ही रोते हैं, तो भूत भाग उठते हैं। यह देखने के लिए भूत किस तरफ भाग रहे थे, वह छत पर खड़े होकर चारों ओर देखने लगा।

उस समय, घर की एक कोठरी में से, जिसमें कुछ सामान रखा था, कुछ आवाज आयी। एक चूहा मर्तबान में गिर गया था, वह बाहर आने की कोशिश करता, उछलता। मगर अन्दर ही रह जाता। भीम ने उसका ही शोर सुना था। परन्तु भीम ने सोचा कि भूत ही मर्तबान में शोर कर रहा था। उसने मर्तबान को अपने तौलिये से ढका। मर्तबान को उठाकर, वह बाग में गया। वहाँ मर्तबान को एक तरफ झुकाकर वह चिल्लाया—"अरे भूत। यह ही तेरी जगह है। यहीं रहो। यदि तुम घर की ओर फिर आये, तो तुम्हें मार दूँगा।"

मर्तबान का चूहा, यह देख कि कुछ भी हो, वह मर्तबान से निकल गया था। अन्धेरे में, खुशी खुशी, कहीं भाग गया। भीम यह सोचता कि उसने कोई बहुत बड़ा काम कर दिया था, जब घर गया, तो बच्चे ने रोना छोड़ दिया था।

भीम ने अपनी पत्नी के पास आकर कहा—"देखा, जब हमारा बच्चा यूँ ही रोया, तो भूत भाग गया। उसे मर्तबान में बन्द करके, मैं बाग में छोड़ आया हूँ।"

"बच्चा यूँ ही तो नहीं रोया था, उसे चींटी ने काटा था। आप किसी चूहे को पकड़ कर ले गये होंगे, कोई भूत भूत नहीं होगा।" महालक्ष्मी ने कहा।

उसके कहने पर, उसको भी लगा कि जो उस मर्तबान से निकला था वह चूहा ही था। उसे अपनी पत्नी की बुद्धिमत्ता पर आश्चर्य हुआ।

जमीन्दार ने अपने पोते के नामकरण संस्कार के लिए सबको निमन्त्रित किया और अतिथियों के लिए प्रति रोज, एक एक मनोरंजन की व्यवस्था की।

कल नामसंस्करण था कि शाम के समय हरिकथा का इन्तजाम हुआ। पंडाल में हरिकथा प्रारम्भ हुई। गाँववाले बहुत-से लोग कथा सुनने आये। बच्चे सब मिल मिलाकर हो हल्ला करने लगे। जमीन्दार को, जो अपने कमरे में बैठे, कुछ कागज पढ़ रहे थे हरिकथा की अपेक्षा, बच्चों का हो हल्ला अधिक सुनाई दे रहा था। इसलिए उसने नौकरों को बुलाकर कहा—"जो इस पंडाल में आये हैं। उनसे कहो कि शोर न करें, कहानी सुनें।"

नौकरों ने आकर कहा—"शोर न करो। बाबू गुस्सा हो रहे हैं।" उन्होंने बहुत कहा। पर किसी ने कुछ न सुनी।

तब जमीन्दार ने भीम से कहा—"ये नौकरों की बात सुनते नहीं लगते हैं। सब से कहो कि कोई शोर न करे।"

भीम पंडाल में आकर चिल्लाया। "शोर न करो। खामोश। यदि किसी

ने मुख खोला, तो उसे बाहर धकेल्दूँगा।" सब जगह खामोशी छा गई।

सभा में उपस्थित लोगों को चुप पा, कथक ने बाजे गाजे के साथ एक नया गीत शुरु किया।

भीम जो बाहर जा रहा था, इसे सुन यकायक पीछे पड़ा और उसने कथक और उसके साथियों से पूछा—"क्या तुम्हें अलग से कुछ कहना पड़ेगा? तुम्हें ही तो चुप रहने के लिए कहा है। चूँ चा न हो। बिल्कुल चुप रहो। समझो।"

कथक हकाबका रह गया। उसे न सूझा कि क्या करे, जो कथा सुनने आये थे वे भी दामाद क्या कर रहा था समझ नहीं पा रहे थे। सुननेवालों को चुप करने में तो कुछ मतलब है, परन्तु कथक को और बाजेवालों को चुप करने का क्या मतलब है? सौभाग्यवश दादी, उस समय वहाँ आयी।

"ओहो, दादी आयी हैं। भीम ने खुश होकर कहा। जमीन्दार के नौकरों ने दादी का स्वागत किया।

बाकी लोग, जो भीम के बारे में तरह तरह की बातें सोच रहे थे समझ गये। चूँकि दादी आयी थी। इसलिए दामाद ने हरिकथा रोक दी थी।

यही नहीं, कथक का आश्चर्य भी जाता रहा। "जो आयी हैं, क्या वे दामाद जी की दादी हैं! तब क्या है! उनके लिए कहानी फिर शुरु करनी है।" कथक ने कहा।

दादी, अन्दर, जाकर जब मुँह हाथ धोकर आकर बैठी, तो कथा यथापूर्व प्रारम्भ हो गई। [समाप्त]

पत्थर की महिमा

एक बुढ़िया ने मरते समय अपने दो पोतों को बुलाकर कहा—"बेटो, मेरे पास सोना चान्दी नहीं है, रसोई घर में पत्थर और सिल है। सिल बड़े तुम ले लो, और पत्थर छोटे को दे दो।" यह कहकर उसने प्राण छोड़ दिये।

"सिल मैं क्या करूँगा! मैं क्या रसोई करके जिन्दगी काटूँगा!" यह सोच बड़ा लड़का, एक और गाँव चला गया। वहाँ मेहनत करके उसने अपनी हालत सुधार ली।

छोटे ने सोचा। जरूर इस पत्थर का कोई उपयोग होगा, नहीं तो दादी मुझे यह न देती।" इसलिए वह हमेशा उसे अपने साथ रखता। उसे पत्थर लेकर इधर उधर फिरता देख, गाँव के लोग उसको चिढ़ाने लगे। वह रोज़ जंगल जाता, ईन्धन जमा कर लेता, उसे बेचकर जीवन निर्वाह करता।

एक दिन जब वह जंगल में ईन्धन इकट्ठा कर रहा था, तो एक बड़ा भेड़िया उसकी ओर आया। वह डरकर पास के पेड़ पर चढ़ गया। भेड़िये को अपने आप बात करता देख उसको आश्चर्य हुआ।

"डरो मत! मैं तुम्हारा कुछ न बिगाड़ूँगा। तुम अपना पत्थर जरा उधार दो मुझे।" भेड़िये ने कहा।

"उससे तुम्हें क्या काम है?" उसने भेड़िये से पूछा।

"मेरा साथ का भेड़िया अभी अभी मरा है। यदि तुम्हारे पत्थर को उसके नाक के पास रखा गया, तो वह फिर जीवित हो उठेगा।" भेड़िये ने कहा।

बर्मी लोक कथा

"मेरे पत्थर की इतनी महिमा है, यह तो मैं भी नहीं जानता था।" उसने कहा।

"मेरे साथ आओ, तुम ही जान जाओगे।" भेड़िये ने कहा।

वह पेड़ से उतरा और भेड़िये के साथ चला। जंगल में एक जगह भेड़िया था। बुढ़िया के पोते ने पत्थर निकालकर भेड़िये के नाक के सामने रखा। तुरत वह जीवित हो उठा।

"तुम्हारे पत्थर की महिमा उसकी सुगन्धी में है। यह जब तक किसी को नहीं मालूम होगा, तभी तक इसकी महिमा है।" पहिले भेड़िये ने उसे बताया। फिर दोनों भेड़िये चले गये।

छोटा अपना पत्थर लेकर गाँव की ओर चला। उसे रास्ते में एक मरा कुत्ता दिखाई दिया। उसने अपना पत्थर निकालकर उस कुत्ते की नाक के सामने रखा। तुरत कुत्ता जीवित हो उठा। वह उठकर और पूँछ हिलाता उसके साथ चलने लगा।

जल्दी ही छोटे के ख्याति सारे गाँव में फैल गई। वह इतना बड़ा वैद्य समझा जाने लगा कि लोग सोचते कि वह प्राण भी दे सकता था। यह कोई न जानता था

कि प्राण देने की शक्ति उसके पत्थर में थी। थोड़े दिनों बाद, राजा की इकलौती लड़की की मौत हो गई। छोटे ने जाकर उसको जिलाया। राजा ने कृतज्ञता में अपनी लड़की का उसके साथ विवाह किया और उसको राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। राजा का दामाद बन जाने पर भी उसने मृत व्यक्तियों को प्राण देना नहीं छोड़ा। इसलिए उस राज्य में किसी को मृत्यु का भय न रहा।

एक दिन छोटे को एक बात सूझी— यदि पत्थर की सुगन्धी में प्राण देने की महिमा है, तो बुढ़ापा दूर करने की महिमा क्यों न होगी? यह सच था कि नहीं, यह देखने के लिए वह रोज़ उस पत्थर को सूँघता और अपनी पत्नी को भी सूँघने के लिए कहता। पत्थर की सुगन्ध सूँघना, राजकुमारी को फिजूल का काम लगा। पर चूँकि उसका पति बड़ा वैद्य था, उसने किसी उद्देश्य से ही ऐसा करने को कहा था। वह रोज़ पत्थर को सूँघने लगी।

इस कारण, जैसा कि उसने सोचा था। छोटे और उसकी पत्नी का, हमेशा के लिए यौवन बना रहा।

उनको देखकर चन्द्रमा को ईर्ष्या हुई। उसका ख्याल था कि अनश्वर यौवन का सिवाय उसके किसी और को अधिकार न था। इसलिए चन्द्रमा छोटे के पत्थर को चुराने की कोशिश में था।

एक दिन जब छोटे ने अपने पत्थर की ओर देखा, तो उसपर काई जमी पाई। काई हटाने के लिए उसने उसको धूप में रखा और स्वयं उसकी रखवाली करता बैठ गया।

यह देख राजकुमारी ने पूछा—"तुम राजा होने जा रहे हो और यह क्या काम है! क्या इस पत्थर की रखवाली तुम्हें ही करनी है! कितने ही नौकर चाकर हैं।"

"मैं सिवाय अपने कुत्ते के किसी का विश्वास नहीं करता। यह कारण, वह अपने कुत्ते को पत्थर की रखवाली करने को छोड़ स्वयं अन्दर चला गया।

इसी समय, चन्द्रमा वहाँ उतरकर आया। पत्थर को लेकर उसने भागने की कोशिश की। अमावस का चन्द्रमा था, इसलिए कुत्ता उसे देख न सका। पर चूँकि वह पत्थर की सुगन्ध जानता था, उस गन्ध के कारण, वह चन्द्रमा का पीछा करता गया।

बर्मा वासियोंका कहना है कि वह कुत्ता अब भी चन्द्रमा का पीछा कर रहा है। चन्द्रग्रहण होने पर वे कहते हैं—"देखो, कुत्ता, चान्द को निगल गया है। ग्रहण के खतम होते ही वे कहते हैं "चन्द्रमा को उसने कैद से छोड़ दिया है।" उनका यह ख्याल है चूँकि कुत्ता बहुत छोटा है, इसलिए वह चन्द्रमा को निगल नहीं सकता।
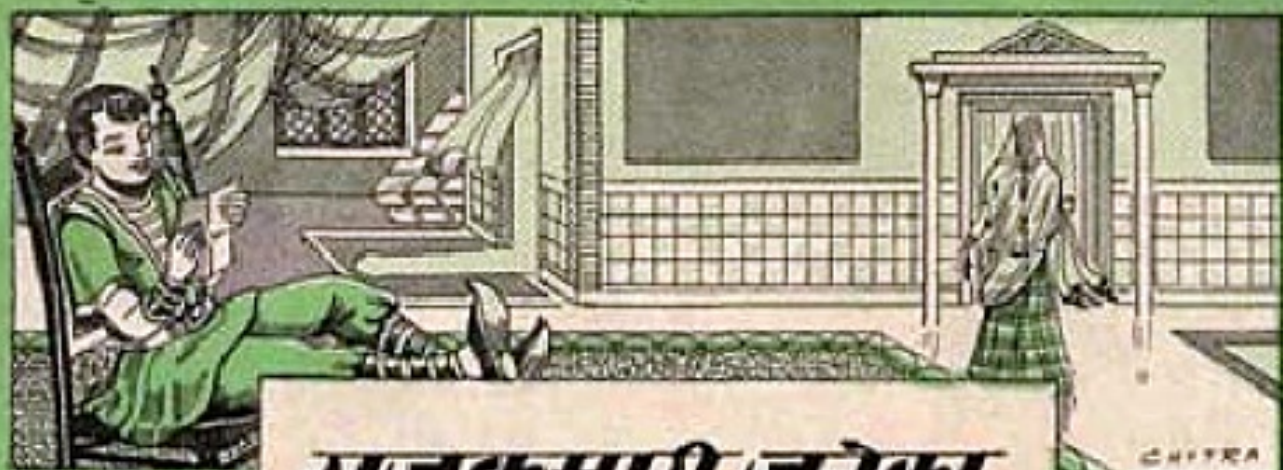
राजकुमारी जुलेका

[२]

हसन जान गया कि वह अन्तःपुर से बाहर आ गया था। तब तक कुछ कुछ सवेरा हो गया था। हसन ड्योढ़ी के पास आया और राजमहल में इस तरह घुसा कि पहरेदार उसको देख लें। वह सीधे वज़ीर के पास गया।

"यह सोच बड़ी फ़िक्र करता रहा कि तुम कहाँ चले गये थे। रात भर मैं नहीं सोया। कहाँ गये थे?" वज़ीर ने हसन से पूछा।

"डमास्कस का एक व्यापारी दिखाई दिया था, वह शिराज से बसरा जा रहा था, रात उसने अपने यहाँ काटने के लिए मुझसे कहा।" हसन ने झूठ बोला।

उस दिन और रात वह कैरिया के बारे में ही सोचता रहा। अगले दिन सवेरे अन्तःपुर से एक हिंजड़ा आया और उसके हाथ में उसने परचा दिया। उस खत में यह तो नहीं लिखा गया था कि किसने लिखा था—इतना जरूर कहा था कि वह रात को चमन में आये। "चन्द्रोदय के समय यदि तुम पेड़ों के बीच आये, तो तुम से प्रेम करनेवाली स्त्री तुम-से बात कर सकेगी।" उस खत में लिखा था।

तब तक हसन को विश्वास न था कि कैरिया उसको वस्तुतः प्रेम कर रही थी। वह सोच रहा था कि उसके कारण बस थोड़ी देर के लिए, अन्तःपुर की स्त्रियों का मनोरंजन हो गया था। यह खत देख उसको अपनी किस्मत पर ही विश्वास हो गया। उसने वज़ीर के पास जाकर कहा—

"आज मक्का से आये हुए मेरे एक मित्र ने मुझे बुलाया है। मुझे जाने दीजिये।"

वज़ीर के यों कहने पर, हसन अपनी जगह लौट गया। जो कुछ रत्न उसके पास थे, उन में से अच्छों को चुनकर, एक सोने के धागे में गूँथा। इस तरह एक हार बनाकर, छोटे दरवाजे से वह बाग में गया और उस जगह जहाँ वह उस दिन सोया था अपनी प्रेयसी की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर बाद कैरिया आयी।

"हसन! क्या बाकी लड़कियों से, सचमुच मैं तुम्हें अधिक सुन्दर लगी थी। जब तक यह फिर न कहोगे, तब तक मुझे विश्वास न होगा।" कैरिया ने कहा।

"तुम मेरे लिए आराध्य हो। देखो मैं तुम्हारे लिए यह छोटा-सा उपहार लाया हूँ। इसके साथ मैं अपना हृदय ही तुम्हें सौंप रहा हूँ।" हसन ने कहा।

"तुम्हारी बात सुनकर खुश होऊँ, या ग़म करूँ....मुझे नहीं सूझ रहा है।" कहकर कैरिया ने लम्बी साँस ली।

"इस समय जब कि तुम्हें खुश होना चाहिए, तुम्हारी ग़मी का क्या कारण है? हम पर क्या आपत्ति आनेवाली है?" हसन ने उससे पूछा।

"आपत्ति! और क्या! राजकुमारी जुलेका छुपे छुपे तुमसे प्रेम कर रही है। यह तुमसे कहने के लिए ही वह तुम्हारा राह देख रही है। उससे क्या कहोगे? उनको ठुकराकर क्या तुम मुझ से प्रेम कर सकोगे? क्या तुम उनके द्वारा मिलनेवाली प्रतिष्ठा, सम्पन्नता, कीर्ति वगैरह, सब ठुकरा सकोगे?" कैरिया ने कहा।

"तुम इस बात पर न डरो मेरे हृदय में जो तुम्हारे लिए स्थान है, वह हजार राजकुमारियाँ नहीं ले सकतीं। मैं अपना

प्रेम दिखाने के लिए बड़ी से बड़ी आपत्ति का सामना कर सकता हूँ। राजा साबूर शा के बाद यदि कहा गया कि जुलेका से शादी करनेवाला राजा बनेगा, तो भी मेरा निश्चय न बदलेगा।" हसन ने कहा।

"जुलेका को गुस्सा दिलाना हम दोनों के लिए ठीक नहीं है। यदि वह चाहे, तो हमारे प्राण निकलवा सकती है। इसलिए भला इसी में है कि हम अपने प्रेम पर दो चार आँसू चढ़ायें।" कैरिया ने कहा।

हसन ये बातें न सुन सका। "इस तरह की बातों से मुझे न सताओ। यदि तुम्हें यह डर हो कि तुम पर कोई आपत्ति आनेवाली है, तो मेरे साथ चली आओ। हम अपने देश आकर किसी निर्जन घाटी में जीवन बितायेंगे। मैं गरीब नहीं हूँ। जब तक हम जीवित हैं, तब तक आराम से जीने के लिए मेरे पास आवश्यक धन है।" उसने कहा।

कैरिया यह सुनकर सन्तुष्ट हुई। उसने कहा—"हसन अब मुझे तुम्हारे प्रेम पर विश्वास हुआ है। अब मैं तुम्हें ठग नहीं सकती। मैं कैरिया नहीं हूँ। राजकुमारी जुलेका हूँ। जो अपने को जुलेका कह रही है, वह मेरी मित्र सहेली कैरिया है। उसे बुलाती हूँ। ठहरो।" उसने धीमे से ताली बजायी। यह सुन कैरिया ने जो जुलेका का अभिनय कर रही थी उसके सामने आकर झुककर सलाम किया।

जुलेका ने हसन की ओर मुड़कर कहा—"हसन, उस दिन जब मैंने तुम्हें चान्दनी में सोते हुए देखा था तभी मैं तुम्हें चाहने लगी थी, मैं तुम से प्रेम करने लगी थी।"

तीनों ने सारी रात गप्प करते करते काट दी। फिर सब अपने अपने रास्ते

चले गये। हसन की ख़ुशी का ठिकाना न था। जब दो दिन बाद वह चमन में गया, तो वहाँ उसको हर जगह सिपाही, सिपाही ही नजर आये। हसन घबराया। वह घर वापिस चला आया। वहाँ उसके लिए एक हिंजड़ा प्रतीक्षा कर रहा था। उसके हाथ में एक खत देकर इस तरह भागा जैसे उसे कोई खदेड़ रहा हो। उस खत पर भी हस्ताक्षर न थे। पर हसन जान गया कि वह खत भी जुलेका से आया था। उसमें लिखा था कि उसका पीछा किया जा रहा था। उससे मिलने का मौका नहीं मिलेगा। हसन को उनका रहस्य नहीं बताना चाहिए। चाहे कैसे भी खराब खबर वह सुने, उसे हौसले से काम लेना होगा।

यह खत देखते ही उसे फ़िक्र सताने लगी। अगले दिन सवेरे खबर फैली कि राजकुमारी जुलेका गुजर गई थी। यह खबर सुनते ही हसन की आँखों के सामने अन्धेरा छा गया। वह मूर्छित हो, वज़ीर के हाथों पर गिर गया।

हसन सात दिन बाद, वज़ीर द्वारा किये गये उपचर्या के कारण ठीक हुआ। परन्तु उसे अब जीवन पर आशा ही जाती रही। महल से नफ़रत हो गई। उसने मौका देखकर रेगिस्तान में भाग जाने की ठानी।

अन्धेरा होते ही अपने रत्न लेकर, हसन यह सोचता कि उस दिन पेड़ की टहनी पर से फाँसी लगाकर मर जाता, तो अच्छा होता। यह सोचता धीमे-धीमे शिराज नगर से निकलकर रेगिस्तान की ओर चल पड़ा। वह नाक के सीधे रात-भर चलता रहा। अगले दिन भी चलता रहा। चलते चलते वह शाम को एक पोखर के पास पहुँचा।
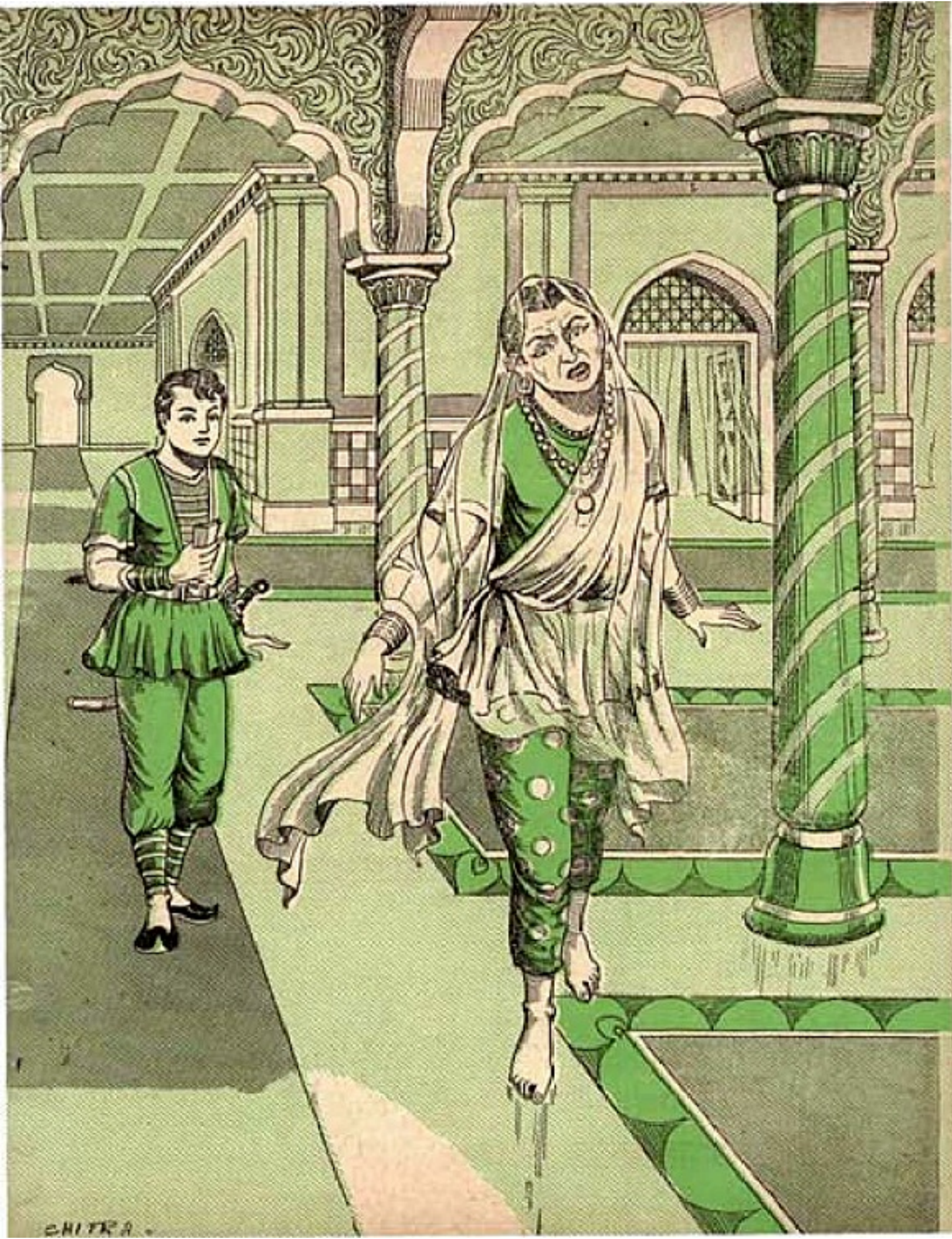
इतने में उसको पीछे से घोड़े की आहट सुनाई दी। हसन ने मुड़कर देखा, तो एक घोड़े पर एक नौजवान आ रहा था। शाम की रोशनी में, उसको वह राजकुमार-सा दिखाई दिया। उसने जब उसका अभिवादन किया, तो उसने सिवाय हाथ उठाकर सलाम करने के कुछ नहीं कहा। हसन को यह सोच कि वह मुसल्मान न था, कुछ निराशा हुई।

"हवा थोड़ी-थोड़ी ठंडी हो गई थी। यहाँ ठंडा पानी भी था। आपकी थकान जाती रहेगी।" हसन ने उस युवक से कहा। वह हँसता घोड़े पर से उतरा। घोड़े को पानी के पास बाँधकर उसने यकायक हसन का आलिंगन कर लिया। हसन तब तक पहिचान न सका था कि वह युवक जुलेका ही थी।

जो कुछ हुआ था, जुलेका ने उसे बताया। उसने कैरिया की मदद से यह दिखाया, जैसे वह मर गई हो। हसन ने जब तक शिराज नगर छोड़ न दिया, तब तक वह छुपी-छुपी रही। फिर उसके बाद उसका पीछा करती-करती इतनी दूर आयी थी। वह हसन के लिए अपने पिता, राज्य, समस्त, भोग-विलासों को छोड़कर चली आयी थी। उन्होंने रात वहीं पोखर के पास काटी। दोनों ही उसी घोड़े पर सवार होकर, जिस पर जुलेका आयी थी, होते होते डमास्कस पहुँचे। वहाँ रहते हुए ही हसन खलीफ़ा का विश्वासपात्र बना और उसका मन्त्री नियुक्त किया गया। वह बड़े ज्ञानी के तौर पर प्रसिद्ध भी हुआ।

घोड़े का किराया

एक गाँव में दो किसान थे। कोई ऐसा न था, जो उनके बारे में उस इलाके में न जानता हो। उनमें एक बड़ा सीधा था। कुछ कुछ भोंदू भी। दूसरा चालाक था। धूर्त भी। भोंदू बड़ा गरीब था। गाड़ी तो दूर, उसके पास एक खच्चर तक न था। उसे एक दिन कन्द को, जिसे उसने खेत में पैदा किया था कस्बा ले जाना पड़ा। वह एक और अपने मित्र के पास गया। उसने उससे कहा—"कल क्या तुम ज़रा अपना खच्चर दे सकोगे?"

"मेरा खच्चर कल दुपहर को कहीं चला गया है। अभी तक उसका कहीं पता नहीं लगा है।" दोस्त ने कहा।

"अब क्या किया जाय? कल मैं अपना कन्द कस्बा ले जाना चाहता था।" भोंदू ने कहा। गाँव के परले सिरे पर एक और किसान था। वह बड़ा लालची था। उसके पास एक घोड़ा था। उससे घोड़ा लेने के लिए भोंदू के दोस्त ने उसे सलाह दी। भोंदू लालची के पास गया। उसने पूछा—"कल क्या तुम अपना घोड़ा मुझे दे सकोगे?"

लालची ने कुछ सोचकर कहा—"अगर मैंने घोड़ा दिया, तो उसके लिए तुम किराया क्या दोगे?"

"मेरे पास कानी-कौड़ी भी नहीं है। एक ही दिन का तो काम है। सोचा था कि यूँ ही दे दोगे।" भोंदू ने कहा।

"नहीं, ऐसा नहीं होगा। मेरे घोड़े का किराया। रोज पन्द्रह कद्दू हैं।"

रमेश
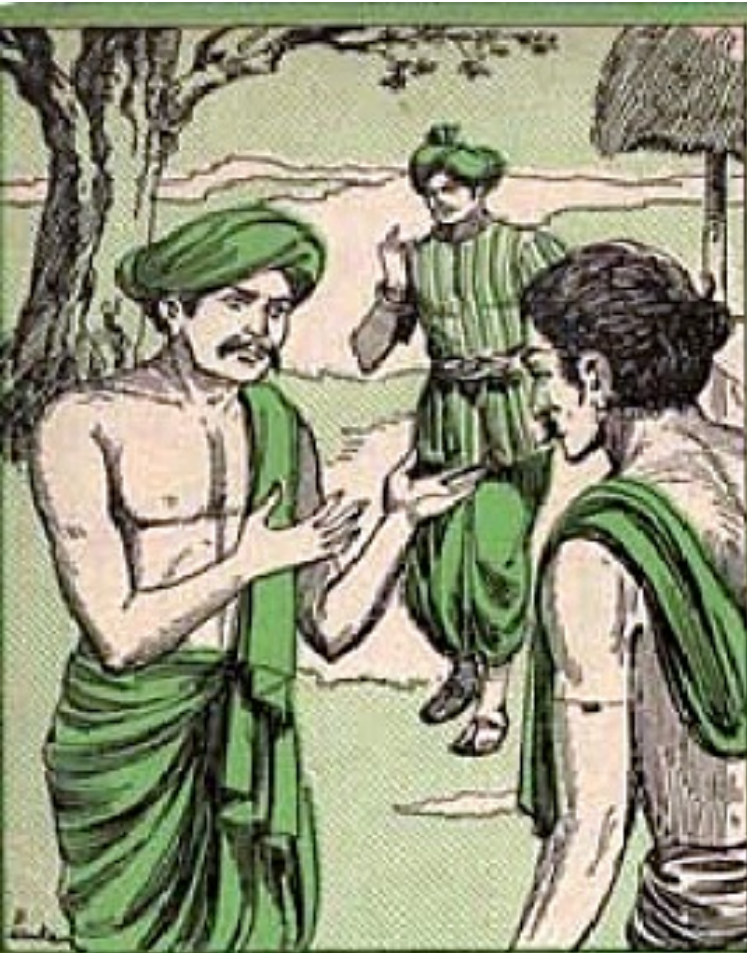
"मेरे पास इस समय पाँच कद्दू ही हैं। बाकी दस कुछ दिनों बाद ही दे सकूँगा।" भोंदू ने कहा।

"जो पाँच तुम्हारे पास इस समय हैं, वे अभी दे दो। बाकी दस देकर, घोड़ा ले जाना।" लालची ने कहा। भोंदू ने पाँच कद्दू लाकर लालची को दे दिये।

अगले दिन सवेरे, मित्र ने अपने खच्चर को भोंदू के पास ले जाकर कहा—"यह लो, मेरा खच्चर आधी रात के समय वापिस आया। तुम अपना माल इस पर ढोकर ले आओ।"

"मैंने तो उस लालची के घोड़े का इन्तजाम कर लिया है।" भोंदू ने कहा।

"अब मेरा खच्चर जो मिल गया है, उसके घोड़े की क्या ज़रूरत है?" मित्र ने कहा।

"मैं उसे पाँच कद्दू पेशगी के भी दे आया हूँ। यदि मैं कहूँगा कि मुझे घोड़ा नहीं चाहिए, तो वह कद्दू भी वापिस नहीं करेगा।" भोंदू ने कहा।

"यह तो अच्छी उलझन है। अब क्या किया जाय?" मित्र ने कहा।

ठीक उसी समय, धूर्त वहाँ आया। उसने सब सुनकर कहा—"तुम यह कहकर कि घोड़े की ज़रूरत नहीं है, अपने कद्दू वापिस ले आओ। उस लालची से क्यों डरते हो?" "मुझे सचमुच उससे डर है।" भोंदू ने कहा।

"तो आओ मेरे साथ मैं देख लूँगा कि वह कद्दू कैसे नहीं वापिस करता है।" कहकर धूर्त अपने दोस्त भोंदू को लेकर निकला।

उनको देखकर लालची ने कहा—"क्यों आये हैं?"

"घोड़े के लिए। कहाँ है घोड़ा तुम्हारा?" धूर्त ने कहा।

"वो देखो, वही जो दिखाई दे रहा है न! जब तक बाकी दस कद्दू नहीं दोगे तब तक घोड़ा नहीं दूँगा।" लालची ने कहा।

"अरे वाह, क्यों इतनी जल्दबाजी दिखाते हो! पहिले यह तो देखने दो कि घोड़ा काफ़ी रहेगा कि नहीं।" धूर्त ने कहा।

"इसमें काफ़ी की क्या बात है? क्या कहीं घोड़ा, काफ़ी और ना काफ़ी होता है!" लालची ने कहा।

"बस, तुम इतना ही जानते हो। चलो, अब नापकर देख लें।" कहकर धूर्त ने अपने हाथ से घोड़े की पीठ को नापते हुए कहा—"कम से कम, तुम्हें दो हाथ जगह की ज़रूरत है। मान लो, हम तुम्हें बीच में बिठा देते हैं। मुझे थोड़ी बहुत जगह काफ़ी है, मान लो। मैं तुम्हारे पीछे बैठता हूँ। मेरे पीछे मेरी पत्नी बैठेगी। उसे दो हाथ जगह चाहिए। तुम्हारी पत्नी को कम से कम दो हाथ से ज्यादह ही जगह चाहिए। उसे सामने बिठा देंगे। फिर बच्चों के लिए जगह देखनी है। चूँकि तुम्हारी लड़की छोटी है, इसलिए वह घोड़े के गले पर बैठ सकती है। छोटा उसकी गोदी में बैठ जायेगा।" वह यों कहता गया।

लालची यह सुन घबराने लगा। "ठहरो भी, क्या तुम्हारी अक़्ल मारी गई है! कहीं घोड़े पर इतने लोग सवार होते हैं!"

"यह बात खुद घोड़ा देख लेगा। वह उसकी समस्या है। हमारी समस्या यह है कि क्या हम सब मिलकर, उस पर तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं कि नहीं।" धूर्त ने कहा।

"तो तुम सब मेरे घोड़े पर सवार होकर तीर्थयात्रा पर जाओगे!" लालची

ने पूछा। "थोड़ी तंगी तो होगी. पर घोड़े पर जगह है जरूर।" धूर्त ने कहा।

"वाह....पर मैं तुम्हें घोड़ा किराये पर दूँगा ही नहीं।" लालची ने कहा।

"अरे वचन देकर मुकरना नहीं चाहिए। बड़े आदमी ऐसा नहीं करते। अरे....लगता है, तुम अपनी माँ को तो भूल ही गये हो। उन्हें कहाँ बिठाओगे? मुरगियों और बकरियों के लिए कहाँ जगह है?" धूर्त ने निराश होते हुए कहा।

लालची पगला-सा गया। वह ज़ोर से चिल्लाया—"क्या तुम मेरे घोड़े को मारोगे? मैं तुम्हें घोड़ा नहीं दूँगा।"

"यदि तुम सौदा करके मुकरे तो तुम्हें अदालत में घसीटूँगा। क्या समझ रखा है हमें।" धूर्त ने कहा।

"तुम अपने पाँच कद्दू ले जाओ। मुझे कुछ नहीं चाहिए।" लालची ने कहा।

"अरे बात तो पन्द्रह कद्दू की हुई थी और अब तुम पाँच कद्दुओं की बात कर रहे हो। धोखा देते हो?" धूर्त ने कहा।

"तुमने मुझे पाँच कद्दू ही तो दिये थे।" लालची ने कहा।

"क्या तुमने पाँच कद्दू के बदले घोड़ा दिया था? तुम तो कह रहे थे कि बिना पन्द्रह कद्दुओं के किराये के तुम घोड़ा नहीं दोगे। यदि तुम बात मुकरते हो, तो तुम्हें पन्द्रह कद्दू देने ही होंगे।" धूर्त ने कहा।

लालची वहाँ न रहा। वह घर भागा भागा गया और पन्द्रह कद्दू लाया—"तुम इन्हें ले जाओ, अपना रास्ता नापो, नमस्ते।"

उनको लेकर, तीनों अपने घर चले आये।

राजद्रोही

एक राजा था, उसकी प्रजा उसको बहुत चाहती थी। क्योंकि वह लोगों के सुख दुःख की परवाह करता था। उसे देखकर ऐसा लगता, जैसे वह स्वयं देखता हो कि देश के किस किस कोने में क्या क्या हो रहा है। उसके यूँ दिखाई देने के भी कारण थे। वह दुपहर तक दरबार में रहता, फिर उसके बाद वह किसी को न दिखाई देता। वह वेष बदलकर, अपने मन्त्री के साथ गुप्त द्वार से निकल जाता और शहर की गलियों में घूम घूमकर मालूम करता कि लोग क्या सोच और कर रहे थे।

एक दिन जब राजा और मन्त्री वेष बदलकर, घूम घामकर राजमहल में आ रहे थे, तो एक व्यापारी ने उनको रोककर एक गहनों की पिटारी-सी दिखाई। राजा ने पूछा कि उस पिटारी में क्या था।

"सुगन्धोंवाला चूर्ण महाराज।" व्यापारी ने कहा।

राजा को यह देख आश्चर्य हुआ कि उसने उसको पहिचान लिया था। फिर भी उसने अपना आश्चर्य व्यक्त नहीं किया। उसने पूछा—"तो इसकी कीमत कितनी है?"

"एक सोने की मोहर।" व्यापारी ने कहा।

राजा ने उसके हाथ में दो सोने की मुहरें रखीं और आगे बढ़ गया। वे दोनों तुरत राजमहल में नहीं गये। बल्कि सूर्यास्त की शोभा देखने नगर के बाहर के झील की ओर गये। वहाँ राजा ने

पिटारी खोली। उसमें एक कागज था, जिस पर लिखा था।

इसको सूँघने पर पंख आते हैं।

"क्सल्वेर" कहने पर हाथ आते हैं।

राजा ने मन्त्री से कहा—"देखा, यह साधारण सुगन्धी का चूर्ण नहीं है। जादूवाला चूर्ण है। इसको सूँघने पर हम पक्षी हो जायेंगे। "क्सल्वेर" कहने पर फिर मनुष्य हो जायेंगे। थोड़ा सूँघकर तो देखें।"

राजा और मन्त्री ने हाथ में थोड़ा-सा चूर्ण लिया। पिटारी को एक जगह रखा। फिर उन्होंने चूर्ण सूँघा और वे तुरत सारस हो गये। वे उड़कर झील के पार गये। फिर वे नगर के ऊपर घरों के छत पर उड़े।

अन्धेरा हुआ। राजा और मन्त्री ने अपना रूप बदलने के लिए "क्सलवेर" कहा। पर उनका रूप बदला नहीं। उन्होंने पक्षी का रूप छोड़ने के लिए बहुत प्रयत्न किया। परन्तु वे असफल रहे। आखिर थक थकाकर उन्होंने झील के किनारे सोने का निश्चय किया।

अगले दिन सवेरे ही वे दोनों नीन्द से उठे। मछलियाँ खाकर उन्होंने अपने पेट भरे। पंखों को अपनी चोंचों से संवारा। फिर वे उड़कर राजमहल में गये और वहाँ वे छत पर बैठ गये। उन्होंने देखा कि लोगों में हलचल मची हुई थी कि राजा और मन्त्री दिखाई नहीं दिये थे। उन्होंने कहने की कोशिश की "तुम हमें ही ढूँढ रहे हो।" परन्तु सारसों की भाषा कोई न समझ सका। वे करते भी तो क्या करते, वे दोनों उड़कर फिर झील के पास उड़ गये।

यह खबर कि राजा नहीं दिखाई दे रहा था, राजमहल से शहर में पहुँची।

जनता में हाहाकार शुरु हो गया। उनका हाहाकार सुनकर राजा और मन्त्री बड़े दुखी हुये। उनको आश्वासन देने के लिए वे सारे नगर में उड़े। लोगों ने उन सारसों को देखकर कहा—"आखिर, राजा के लिए ये सारस भी रो रहे हैं।" परन्तु वे असलियत न जान सके।

एक दिन जब वे नगर पर उड़ रहे थे, तो उनको राजवीथि में एक जलूस जाता दिखाई दिया। उस जलूस में राजा की पोषाक पहिने एक युवक दिखाई दिया। उस पर राजा के सब चिन्ह थे। जलूस में लोग "महाराज की जय" जयकार कर रहे थे। नगर का नया राजा, सेनापति का लड़का था। वह बड़ा दुष्ट था। राजा ने मन्त्री से कहा—"यदि यह राजा बन गया, तो मेरी जनता को सुख न मिलेगा।"

उसी दिन सेनापति के लड़के का राज्याभिषेक भी हुआ। राजा और मन्त्री यह समारोह स्वयं देखकर फिर झील के पास चले आये।

"अब सब मालूम हो गया है। हमारी यह हालत सेनापति ने ही की है। फिर उन्होंने आपस में कुछ सलाह की। उन्होंने झील के परली तरफ रहने का निश्चय किया और वे निर्जन वन में उड़ गये।

सप्ताह बीत गये। मास बीत गये। राजा और मन्त्री सारस के रूप में जंगल के पोखरों के आस पास ज़िन्दगी बसर करने लगे। जब वे मेंढक और मछलियों को पकड़ रहे थे, तो उन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा,—एक पक्षी पेड़ के तने में कीड़ों के लिए ठुक ठुक कर रहा था और बीच बीच में रो पड़ता था।

राजा ने थोड़ी देर यह दृश्य देखा। "क्यों पक्षी, तुम हमारी भाषा समझ रहे हो।"

"हाँ, समझता हूँ...." पक्षी ने सारसों की ओर मुड़कर कहा।

"तो बताओ, क्यों यों आँसू बहा रहे हो।" राजा ने कहा।

"तुम जन्म से पक्षी हो। तुम कैसे मेरा कष्ट समझ सकोगे। मैं कभी स्त्री थी। अब मुझे यह पक्षी का रूप धारण करना पड़ा है।" उस पक्षी ने कहा।

"तुम अपनी सारी कहानी सुनाओ। हम समझ सकते हैं।" राजा ने कहा।

"इस झील के पास के नगर के सेनापति ने मेरी यह हालत की है। मैं पास के राजा की लड़की हूँ। पिता के बाद मुझे गद्दी पर बैठना था, सेनापति ने मुझे अपने पुत्र के साथ विवाह करने के लिए कहा। मैंने उस नीच से विवाह करने से इनकार कर दिया। इसलिए उसने मंत्रशक्ति से मुझे पक्षी बना दिया। उसने कहा कि जब कोई मनुष्य मुझे पक्षी बनने के लिए कहेगा, और अगर मैं उसके लिए मान गई तो फिर मैं स्त्री बन जाऊँगी। जब मैं पक्षी के रूप से ऊब जाती हूँ, तो मैं सोचती हूँ कि वह अपने लड़के को भेजेगा। इस बीच मुझमें स्त्री बनने की इच्छा उत्तेजित करने के लिए हर रोज़ रात को तीन मनुष्य आते हैं, और रोज़ इस तरह बताते हैं, ताकि मैं सुन सकूँ कि वे कैसे कैसे मेरी प्रजा को तकलीफ़ दे रहे हैं। उनकी बातें मुझे चुभती हैं। जब कभी मैं उन्हें याद करता हूँ, तो मैं आँसू बहाने लगती हूँ।" पक्षी ने कहा।

"जिन तीन मनुष्यों के बारे में कह रहे हो, वे कहाँ मिलते हैं?" राजा ने पूछा। पक्षी ने सारसों को जंगल में एक खाली जगह दिखाई दी।

शाम को अन्धेरा होने से पहिले राजा और मन्त्री उड़कर उस खाली जगह पर पहुँचे और वहाँ पौधों के पीछे छुप गये। राजा को यह आशा थी कि उनकी बातचीत से उनका फ़ायदा हो सकता था।

अन्धेरा होने के बाद तीनों आदमी वहाँ आये। उनके आने के बाद दो आदमी और आये। ये दोनों और कोई नहीं, सेनापति और उसका लड़का राजा ही थे।

जो पहिले आये थे उन्होंने कहा—"महाराजा की जय! आपका शासन कैसे चल रहा है? प्रजा क्या कह रही है?"

"पहिले तो उन्होंने मुझे देखकर सन्तोष प्रकट किया, पर क्रमशः वह सन्तोष कम होता जा रहा है। वे अपने पुराने राजा को अभी नहीं भूल पाये हैं।" सेनापति के लड़के ने कहा।

"वे मूर्ख हैं। उनको पुराना राजा फिर न मिलेगा। मैंने उसके लिए ज़रूरी इन्तज़ाम कर दिया है।" तीनों में से एक ने कहा। उसी ने राजा को सुगन्धी का चूर्ण बेचा था। वह और उसके साथ के दो आदमी मान्त्रिक ही थे।

"हाँ, हाँ, ज़रा हमें भी बताओ कि तुमने राजा और मन्त्री को कैसे गायब कर दिया?" दोनों मान्त्रिकों ने कहा।

"मैंने व्यापारी का वेष बदलकर, राजा और मन्त्री को मन्त्रवाली भस्म दी। उसके सूँघने से पक्षी हो जाते हैं। उस भस्म की पिटारी में उसके उपयोग के बारे में भी मैंने एक पर्चा रख दिया है। "कजलवेर" कहने से पक्षी अपना पूर्व रूप ले लेते हैं। परन्तु उसमें मैंने थोड़ा-सा परिवर्तन कर दिया है। उसमें मैंने "कसलवेर" कहने को लिखा है। वे चाहे "कसलवेर"

कहते रहें, परन्तु उनका रूप नहीं बदलेगा। और वे चिल्लाते चिल्लाते मर जायेंगे। लेकिन वे यह थोड़ी-सी तब्दीली नहीं कर पायेंगे।" पहिले मान्त्रिक ने कहा। वह सुन और इतना हँसे कि उनके पेट फूल गये।

राजा और मन्त्री ये बातें सुनकर वहाँ से धीमे धीमे कहीं और चले गये। और वहाँ से वे उस पक्षी के पास गये। वह पक्षी अभी पेड़ के तने के पास ही बैठा था।

राजा और मन्त्री के "कजलवेर" कहते ही, वे फिर से आदमी बन गये। राजा ने पक्षी के पास आकर कहा—"क्या मुझ से विवाह करोगे, अगर तुम्हें इस पर कोई आपत्ति न हो तो...." वह अभी अपना वाक्य पूरा भी न कर पाया था कि पक्षी अदृश्य हो गया और उसके स्थान पर राजकुमारी प्रत्यक्ष हुई।

वे तीनों अन्धेरे में ही निकल पड़े और सूर्योदय तक वे नगर में पहुँचे। द्वारपालक आदि ने अपने राजा को पहिचान लिया। "राजा वापिस आ गये हैं।" यह खबर होते होते सब जगह फैल गई। लोगों के झुन्ड जमा हो गये। उन्होंने राजा, मन्त्री और पड़ोस की राजकुमारी का स्वागत किया। नगर, मन्दिर के घंटे, बाजे गाजों की ध्वनि से प्रतिध्वनित हो उठा।

जब सेनापति और उसका लड़का नगर में आये तो सैनिकों ने उन्हें पकड़ लिया। दोनों को हथकड़ी और बेड़ी लगा दी गई और कैद में डाल दिया गया।

राजा का और पड़ोस की राजकुमारी का वैभव के साथ विवाह हुआ। इसी सिलसिले में एक बड़ी दावत दी गई, जिसमें नगरवासी भी शामिल हुये।

किष्किन्धा काण्ड

वानर थके मांदे, भूखे प्यासे, मय के बनाये ऋक्षबिले के पास आये। उसमें से सुगन्धि आ रही थी, पक्षी उड़ रहे थे। पर चूँकि बिल के मुँह पर बेलें वगैरह थीं, इसलिए अन्दर आना मुश्किल था।

"उसके अन्दर से पक्षियों को आता और हरी भरी बेलों को देख, तो ऐसा मालूम होता है, जैसे इसके अन्दर कोई कुँआ है नहीं तो तालाब है।" हनुमान ने सोचते हुए कहा।

तुरन्त वानरों ने उस बिल के अन्दर प्रवेश किया। अन्दर घना अन्धकार था। उस अन्धेरे में जब वे एक दूसरे का हाथ पकड़े पकड़े आगे बढ़े, तो उनको एक अद्भुत प्रदेश दिखाई दिया। यह प्रदेश प्रकाशमान था, बड़े बड़े पेड़ थे। सोने चान्दी और रत्नों से सजाये हुए घर थे। सोना, चान्दी और पीतल के पात्र इधर उधर बिखरे पड़े थे। अगर, चन्दन, फल और रेशमी वस्त्र, सोने आदि के भी ढेर पड़े थे।

पास ही एक स्त्री, वल्कल वस्त्र पहिने, तपस्या कर रही थी, तेज से उसका चेहरा प्रदीप्त-सा था।

हनुमान ने उसके पास आकर नमस्कार करके पूछा—"तुम कौन हो? यह बिल

उसने तपस्या करके ब्रह्मा से कई वर पाये थे। उसने अपनी शक्ति से यह प्रदेश बनाया और हेमा नामक अप्सरा के साथ सुख से रहा करता था। यह देख इन्द्र को ईर्ष्या हुई और उसने मय पर वज्र का उपयोग किया। फिर ब्रह्मा ने यह प्रदेश हेमा को दे दिया, हेमा मेरी अच्छी सहेली है। मैं ससावर्णी की लड़की हूँ। मेरा नाम स्वयंप्रभा है। मैं इस प्रदेश की रक्षा करती यहाँ रहती हूँ। तुम यहाँ किस काम पर आये हो? यहाँ के फल आदि खाकर, पानी पीकर, अपना वृत्तान्त बताओ।"

जब वानर फल और पानी पीकर सन्तुष्ट हुए तो हनुमान ने स्वयंप्रभा को अपना वृत्तान्त यों बताया :—

"दशरथ का लड़का राम, त्रिलोकाधिपति इन्द्र के समान है। वह अपने भाई लक्ष्मण और अपनी पत्नी सीता के साथ दण्डकारण्य आये हुए हैं। जब वे जनस्थान पर थे, तो सीतादेवी को रावण उठा ले गया। राम का मित्र सुग्रीव वानरों का राजा है। उन्होंने सीतादेवी को खोजने के लिए हमें दक्षिण की ओर भेजा

क्या है? हम बहुत दूर से आ रहे हैं। थक गये हैं। प्यासे हैं। यह सोच कि हमें यहाँ पानी मिल सकेगा, हम जल्दी में यहाँ आ गये हैं। परन्तु यहाँ का हाल देखकर ऐसा मालूम होता है, जैसे यह किसी राक्षस की माया हो। ये घर, ये फल किसके हैं? यहाँ के पानी में सोने के कछवे, सोने की मछलियाँ, सोने के मच्छ, किसकी महिमा से पाये जाते हैं? बताओ।"

तब तपस्विनी ने यों कहा—"दानवों का विश्वकर्मा, मय यहाँ रहा करता था।
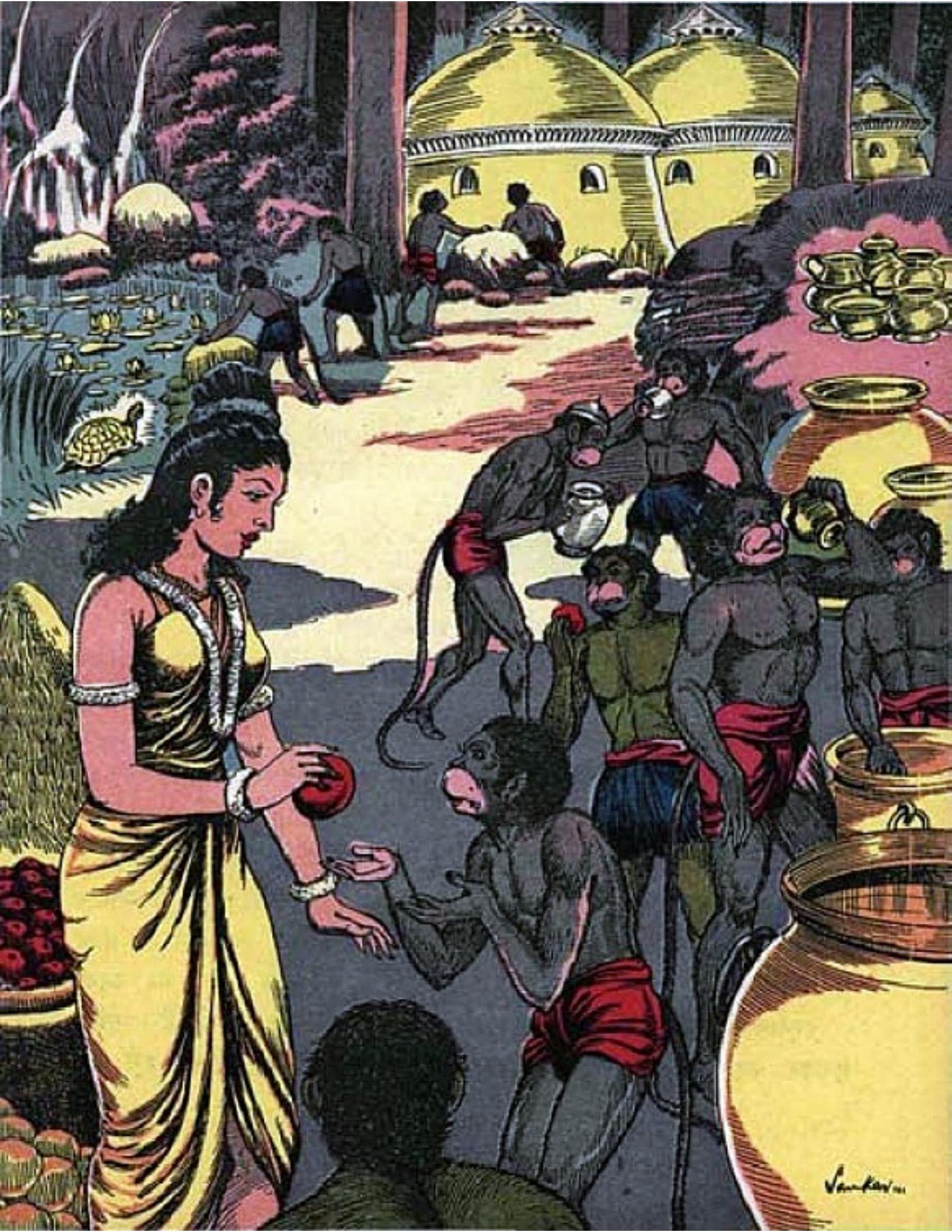
है। हमने सारा दक्षिण छान डाला। जब हम भूखे प्यासे एक पेड़ के नीचे बैठे थे तो बेलों से ढका यह बिल दिखाई दिया, फिर हमने गीले पंखों को फड़फड़ाते पक्षियों को यहाँ से आते देखा, तब मैंने ही वानरों को साहस करके, बिल के अन्दर जाने के लिए प्रोत्साहित किया। हम इस तरह यहाँ पहुँचे। सौभाग्यवश तुम हमें यहाँ मिले और हमारी धधकती भूख मिटा सके।

हनुमान ने स्वयंप्रभा को अपना वृत्तान्त सुनाकर कहा—"तुमने हमें प्राणदान दिया है। इसके बदले जो तुम हमें करने के लिए कहोगे, हम करने को तैय्यार हैं। हम इस बिल में घुसने को तो घुस गये हैं, पर कैसे इस बिल में से निकला जाये, हम नहीं जानते।"

स्वयंप्रभा ने कहा कि उसे किसी प्रत्युपकार की आवश्यकता न थी। यदि वानरों ने आँखें मूँद लीं, तो मैं अपनी तपःशक्ति से उनको बिल के बाहर भेज दूँगी। जब वानरों ने आँखें बन्द करके खोलीं, तो वे सब बिल से बाहर थे। स्वयंप्रभा उनको कुछ पहाड़ों के चिन्ह बताकर, बिल में चली गई।

विन्ध्या पर्वत के पश्चिम की छोर पर बैठकर पश्चिम समुद्र को देखते हुए वानर यह सोच चिन्तित हुए कि उनकी अवधि समाप्त हो गई थी, शिशिर चला गया था और बसन्त आ रहा था।

तब अंगद ने शेष वानरों से कहा—"हम सब सुग्रीव की आज्ञा के आधीन हैं। उनकी निश्चित अवधि में हम सीता को नहीं खोज सके। हम अब उनकी आज्ञा का अतिक्रमण कर रहे हैं। सुग्रीव बड़ा क्रूर है। निर्दय राजा है। हमें नहीं

छोड़ेगा। उनके पास जाने से तो यही अच्छा है कि अन्न जल छोड़कर यहीं मर मरा जायें। मैं होने को तो युवराज हूँ, पर मुझे सुग्रीव ने युवराज नहीं बनाया है। परन्तु राम ने बनाया है। सुग्रीव को तो मुझसे चिढ़ है। यदि मैं उसको अब मिला तो वह मुझे जीवित न छोड़ेगा।"

बाकी वानरों ने भी यही सोचा। यदि कम से कम सीता मिलती तो, राम अवधि के खतम होने पर भी हमें माफ़ कर देते। पर अवधि के बाद सीता का पता मालूम किये बिना किष्किन्धा जाने से तो यही अच्छा है कि हम यहीं रह जायें।

तार ने विशेष तौर पर उनसे कहा—"इतने सोचने विचारने की क्या बात है, यदि तुम चाहो तो हम यहीं रह जायेंगे!"

अंगद का बात करने का लहजा देख, हनुमान ने मन ही मन सोचा—"अरे भाई, यह तो लगता है कि सुग्रीव का राज्य हथियाने की फ़िक्र में है।"

यह सोच उसने वानरों और अंगद में भेद करने के उद्देश्य से कहा—"अंगद वानरों

के मन में जो अब विचार है, ये कुछ देर बाद नहीं रहेंगे। क्या तुम्हें सचमुच यह विश्वास है कि ये अपनी पत्नी, परिवार को छोड़कर यहाँ तुम्हारी आज्ञा पालन करते रहेंगे? सच कहता हूँ, सुनो। मैं या जाम्बवन्त या नील या सुहोत्र स्वप्न में भी सुग्रीव को छोड़कर यहाँ नहीं रहेंगे। यही नहीं, बलवान से शत्रुता मोल लेना ठीक नहीं है। यह बिल लक्ष्मण के बाणों से भी तुम्हारी रक्षा न कर सकेगा। अगर लड़ना ही चाहते हो, तो तुम वाली से अधिक बलवान तो हो नहीं। यदि तुम्हें

यह भ्रम हो कि ये सब बानर तुम्हारी बात सुनेंगे, तो तुम जल्दी ही अकेले रह जाओगे। यह सच नहीं है कि सुग्रीव तुम से चिढ़ा हुआ है। क्योंकि तुम्हारी माँ पर वह आसक्त है, इसलिए उसके कारण उसे तुम पर भी प्रेम है।"

ये बातें अंगद को बिल्कुल न जँचीं। उसने क्रुद्ध होकर कहा—"सुग्रीव में स्थिर बुद्धि, आत्मशुद्धि, चित्तशुद्धि, दया, पराक्रम, गाम्भीर्य कहीं भी लेशमात्र नहीं है। जब भाई जीवित था, उसने क्या-क्या नहीं किया। भाभी को पत्नी बनाया। राक्षस से लड़ने जब उसका भाई बिल में गया, तो बिल के द्वार पर उसने पत्थर रखा। जिसने उसको राज्य दिया, ऐसे राम के प्रति ही उसने कृतघ्नता दिखाई। लक्ष्मण के भय के के कारण उसने हमें सीता की खोज के लिए भेजा है। और उसे अधर्म का भय कहाँ है? ऐसा आदमी अपने लड़के को राज्य देगा। क्या मुझे देगा? इस बहाने कि मैंने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है, वह अवश्य मुझे मरणदण्ड देगा। मैं वापिस नहीं जाऊँगा। यहीं उपवास करूँगा। मुझे छोड़कर तुम चले जाओ। राम, लक्ष्मण को, हमारे चाचा, चाची और सब को मेरा नमस्कार कहना, मेरी माँ को, जो मुझे प्राणों से भी अधिक चाहती है, आश्वासन देना। वह जो भी हो, मेरे लिए प्राणों का परित्याग कर देगी।" यों कहकर, बानरों को नमस्कार करके, भूमि पर दूब बिछाकर, रोता, वह वहीं लेट गया।

अंगद को देख, सब बानरों को दुख हुआ। उन्होंने बाली की प्रशंसा की और सुग्रीव को कोसा और स्वयं उपवास करने की ठानी। समुद्र में स्नान करके, तट पर

दूब बिछाकर उस पर रोते वे लेट गये। वे लेटे लेटे, राम जब से बनवास के लिए निकले थे, तब से जो जो घटनाएँ हुई थीं, उसके बारे में बातें कर रहे थे, तो उनको यकायक भयंकर गिद्ध दिखाई दिया। भय के कारण जो वे चिल्लाये, तो आसपास की गुफ़ायें गूँज उठीं।

यूँ आनेवाला जटायु का भाई सम्पाति था। वह बिन्ध्यापर्वत की एक गुफ़ा में रह रहा था। उसने गुफ़ा के बाहर आकर कहा—"भगवान की कृपा से आज मेरे लिए पेट-भर खाना मिला है। मैं इन बन्दरों को मारकर अपना पेट भरूँगा।"

यह सुन अंगद ने हनुमान से कहा—"हमारी भी क्या हालत है! यम गिद्ध के रूप में, हमें इस संसार से ले जाने आया है। हम न राम का काम कर सके न सुग्रीव की आज्ञा का ही पालन कर सके। हमसे अच्छा तो यह जटायु ही है, इसने राम के लिए अपने प्राण छोड़ दिये। हम निकलने को तो राम के काम पर निकले हैं परन्तु हम इस गिद्ध के मुँह में जानेवाले हैं। यदि जटायु प्राण न

छोड़ता, तो हमें यों सीता को खोजने की नौबत ही न आती। रावण की बात वह ही बताता। रावण यदि सीता को न उठा ले जाता, तो यह काम हमारे सिर पर पड़ता ही न। दशरथ यदि न मरते, तो कभी के वे राम को बुला लेते। यदि दशरथ कैकेयी को वर न देता, तो यह बात इतनी दूर जाती ही न। ये सब हमारे प्राण लेने के लिए ही हुए।

सम्पाति ने ज़ोर से कहा—"कौन है वहाँ! कौन कह रहा है कि मेरा भाई मर गया है। कितने ही दिनों बाद भाई का नाम सुनकर सन्तुष्ट हुआ। बेटा, मेरे पंख सूर्य की किरणों के कारण जल गये। मैं तुम्हारे पास नहीं आ सकता। मुझे कृपा करके अपने यहाँ ले जाओ।" वानरों ने इस सब को उसकी चाल समझी। चूँकि वे मरने को तैयार थे, इसलिए मृत्यु का इस रूप में आना ही अच्छा है, यह सोच अंगद उठा और सम्पाति को पहाड़ पर से उतारकर लाया।

उसने सम्पाति को राम का वनवास पर आना जनस्थान से रावण का सीता को उठाकर ले जाना, यह देख जटायु का रावण से युद्ध करना, उसका मारा जाना, राम और लक्ष्मण का सीता को खोजते खोजते ऋष्यमूकपर्वत पर आना सुग्रीव से मैत्री करना, वाली को मारना, वानर राज्य का सुग्रीव को देना, सुग्रीव का सीता की खोज के लिए उसको भेजना, उनका इस काम में असफल रहना, वापिस जाने की इच्छा न होने के कारण वहीं उपवास करके मर जाने का निश्चय करना, आदि के बारे में सविस्तृत बताया।

२२. बोरो बुदर शिल्प

जावा द्वीप में, नवीं शताब्दी के अद्भुत शिल्प के अवशेष हैं। बोरो बुदर के ये शिल्प सारे मलेशिया में प्रसिद्ध हैं। ये शिल्प यहां के हिन्दू, बौद्ध सभ्यता से सम्बन्धित हैं। १५ वीं शताब्दी में अरबों ने यह सभ्यता नष्ट कर दी।

ये शिल्प एक छोटे-से टीले पर पीरामिड़ के आकार में बनाये गये हैं। ये मंजिल के रुप में टीले की चोटी तक चले गये हैं। कुल पाँच मंजिलें हैं। यहाँ के शिल्प आज तक नहीं बिगड़े हैं। इन्हीं के कारण बोरो बुदर की संसार में ख्याति है।

देवालय के चारों ओर पत्थर रखे गये हैं और उन पर शिल्प निर्मित हैं। पत्थरों के बीच न सिमेन्ट है, न चूना ही। १५०० से अधिक पत्थर शिल्प के लिए उपयुक्त हुए हैं। उन पर बुद्ध का जीवन खचित है। इन शिल्पों की लम्बाई तीन मील से भी अधिक है। इस आलय का निर्माण बड़े पिरामिड़ से भी अधिक कष्टसाध्य समझा गया है।

१. विजयराजसिंह, नई देहली

आप "विचित्र जुड़वा" जैसी पुस्तक क्यों नहीं छापते ?

छाप चुके हैं और यह हमारे यहाँ से मिल भी सकती है।

२. अशोक श्रीवास्तव, नागपुर

"विचित्र जुड़वा" मिलने का पता क्या है?

वही जो "चन्दामामा" का है, आपने जिस पते पर चिट्ठी लिखी है।

३. गोपालदास, बुरहानपुर

सुना है कि आप "पत्र मित्र संघ" दिसम्बर मास से शुरु कर रहे हैं, क्या यह सच है?

जी नहीं, यह तो सच नहीं है।

४. अनिलकुमार बख्शी, रतलाम

क्या मैं पुरानी "चन्दामामा" की प्रतियाँ मँगा सकता हूँ?

हमारे पास पुरानी प्रतियाँ हैं नहीं। इसलिए हम भेज नहीं सकते।

५. अशोककुमार, पाणिक्परा

आप मलयालम में क्यों नहीं "चन्दामामा" प्रकाशित करते?

करते थे। पर आर्थिक दृष्टि से वह उतना उत्साहवर्धक न था।

६. अमृतसिंह पाटिया, टाटा नगर

क्या आपके यहाँ से कोई ऐसी किताब प्राप्त हो सकती है, जिसमें "भयंकर घाटी" नामक कहानी शुरू से अन्त तक छपी हो?

अभी तो वह "चन्दामामा" में ही नहीं छपी है। किताब के छपने पर चन्दामामा के द्वारा ज़रूर आपको इसकी सूचना मिलेगी।

७. जीवनकुमार, रघुदास

आप बंगला में "चन्दामामा" छापते हैं कि नहीं?

नहीं तो।

८. हीरावल्लभ थपलियाल, बुलन्द शहर

"चन्दामामा" सबसे अधिक किस भाषा में बिकता है?

हिन्दी।

९. लक्ष्मणदास आहुजा, तुमसर

"चन्दामामा" में प्रकाशित धारावाहिक उपन्यास क्या फिर से प्रकाशित नहीं किये जाते?

नहीं। धारावाहिक रूप में नहीं।

१०. वीणाकुमारी, खन्ना

क्या आप गलीवर की कहानियाँ छाप चुके हैं, या छापेंगे?

छाप चुके हैं।

११. यशवीरसिंह, गोंडा

किस कारणवश आप धारावाहिक कहानियों को पुस्तकाकार में प्रकाशित नहीं करते?

मुद्रण की कठिनाइयाँ हैं। फिर कागज़ भी नहीं मिल रहा है।

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

भोजन के पहले स्नान करो!

प्रेषक:
प्रेमकुमार सिन्हा - कलकत्ता

Photo by Sundara Moorthy
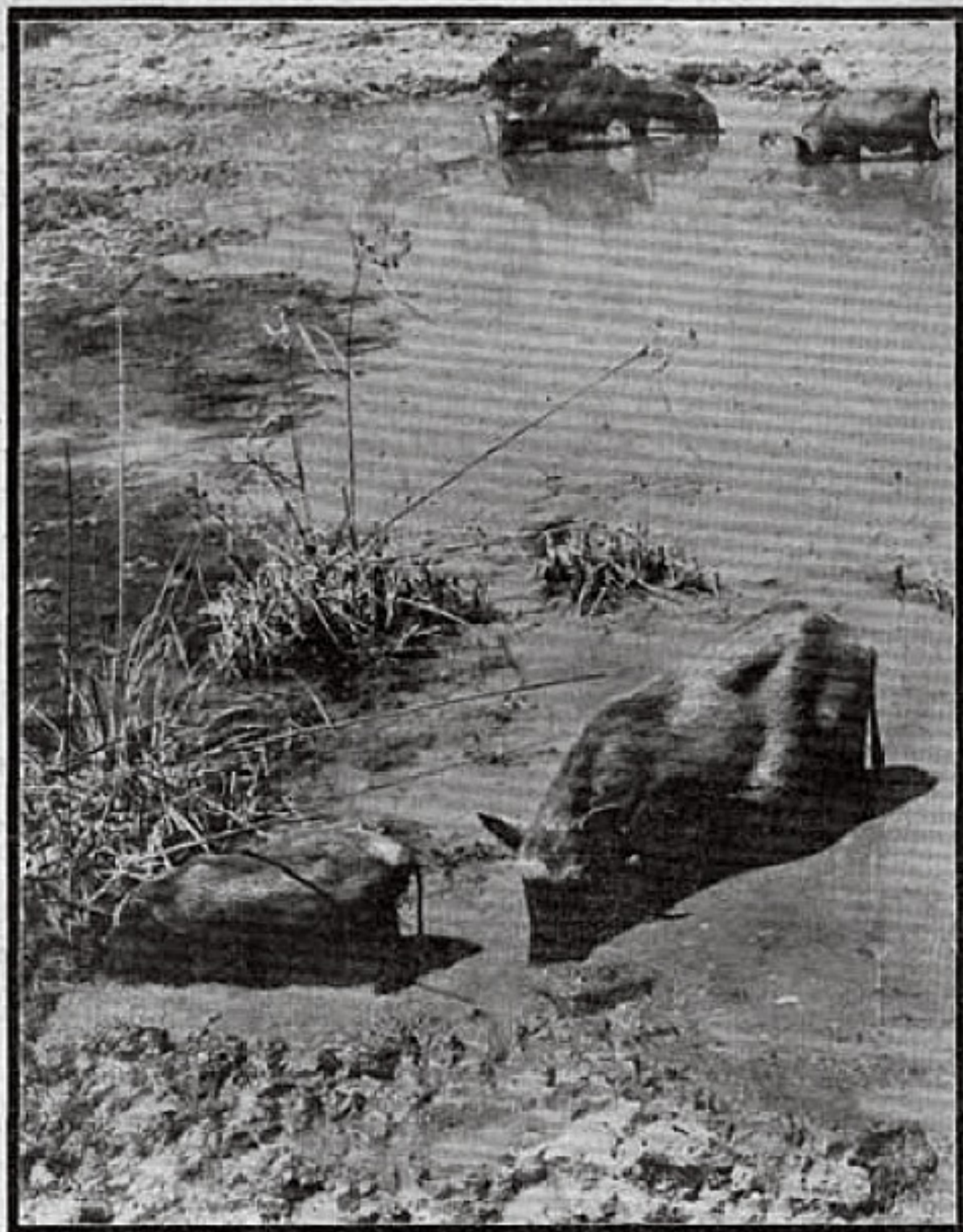
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

नहीं भाई, पहले पेट भरो !!

प्रेषक :
प्रेमकुमार सिन्हा - कलकत्ता

अग्निगोल

★ अग्निगोल जब नीचे के वायु स्तरों में आते हैं, तो वायु तरंगें बनती हैं और बड़ी ध्वनि होती है। उनके साथ जो, प्रकाश जो बिजली का सा शब्द, आकाश में घंटों दिखाई देनेवाले धुंये के बादल एक बार देखते हैं, वे जिन्दगी भर उनको नहीं भूल सकते।

★ कुछ अग्निगोल बिना पूरे जले ही जमीन पर गिरते हैं। ये पत्थर और लोहे के टुकड़ों के रूप में होते हैं। इनको "मिटियरेट" उल्का कहते हैं। इनके रसायनिक गुणों के आधार पर सौर मण्डल के पदार्थों के स्वभाव के बारे में बहुत कुछ सामग्री मिली है।

★ १९२९ एप्रिल २२ को बल्गेरिया में, तीन व्यक्ति शिकार के लिए गये। देवदार के जंगल में बिल्कुल नीरवता थी। आकाश में कहीं बिखरी बिखरी चान्दनी दिखाई दे रही थी। यकायक शिकारियों ने देखा कि वह सारा प्रान्त इस तरह चमक उठा जैसे यकायक हजारों बिजलियाँ एक साथ जल उठी हों। उस समय एक टीले पर थे और वह कान्ति देख, स्तब्ध से खड़े रह गये। उस प्रकाश में देवदार, पत्थर और नाले इस तरह दिखाई दिये। दिये, जैसे कि दिन में दिखाई देते हैं। जब उन्होंने एक क्षण बाद आँखें खोलीं, तो एक अग्नि गोला प्रकाशमान अंगारे उगलता-सा आकाश में से उनके पास आता प्रतीत हुआ। जिस रास्ते वह आ रहा था। वह भी चमक रहा था। उसके जाने के बाद, फिर वहाँ अंधेरा छा जाता। इसके एक दो मिनट बाद, इतनी भयंकर ध्वनि हुई जैसे कई बम एक साथ फूट गये हों, बिजली की ध्वनि और उसकी प्रतिध्वनि सुनाई पड़ी। यह जिन्होंने स्वयं देखा था उन में से एक शिकारी ने अगले दिन अपना अनुभव संसार को बताया।

★ अग्निगोल, जब वायुस्तरों में से नीचे के गाढ़े स्तरों पर आते हैं, तो उनके जलन में कुछ परिवर्तन होते हैं। उसके चारों ओर के ज्वलित वायु का परिमाण बहुत बढ़ जाता है। जो ऊपर को स्तरों में नीला और हरा दिखाई देता है, वह नीचे के स्तरों में, हल्दी और लाल रंग का हो जाता है। साधारणतया अग्निगोल का केन्द्र बिजली के दीप की तरह जलता है। उसके चारों ओर का वायु का छोर लाल लाल दिखाई देता है।

★ १ मार्च १९२२, ओमस्क प्रान्त के तरा जिला में, जो अग्निगोल के गिरने के कारण ध्वनि हुई १२५ किलो मीटर दूरी पर वह रिकोर्ड की गई, उसकी प्रतिध्वनि २५० मीटर दूर सुनाई पड़ी।

★ अग्निगोल से इतनी गरमी उत्पन्न होती है, कि उनके बीच की उल्का पिघलकर भाप भी हो सकती है। पिघला लोहा छोटी छोटी गोलियों में जम भी सकता है। ये गोलियाँ अन्दर खोखली होती हैं और जो लोहा, भाप हो जाता है, वह धूल-सा बन जाता है और जिस रास्ते से अग्निगोल गुजरता है, वहाँ घंटों रहता है। प्राय: उल्काओं के ऊपरले स्तर पर, प्रकाश की किरण जितनी शीघ्रता से लुप्त हो जाती हैं निचले स्तर पर उतनी शीघ्रता से लुप्त नहीं होती।

★ स्पूतनिक को हम क्रित्रिम उपग्रह कहते हैं। ये कृत्रिम अग्निगोल भी हैं। चूँकि जिस ऊँचाई पर ये भूमि की परिक्रमा करते हैं वहाँ थोड़ी हवा भी होती है। यह हवा स्पूतनिक का निरोध कर उनकी गति को कम कर देती है। ज्यों ज्यों गति खतम हो जाती है, त्यों त्यों स्पूतनिक भूमि के पास आता जाता है। क्रमश: जब उल्काओं से ज्वलित वायु स्तर में आता है तो वह स्वयं एक उल्का-सा बन जाता है। इसको आँखों से देखना सम्भव नहीं है। पर इसको राडार में देखा जा सकता है। स्वाभाविक अग्नि गोल से, इस क्रित्रिम अग्निगोल का परिशोध अधिक लाभप्रद है। क्यों कि वैज्ञानिक, पहिले ही स्पूतनिक की आकृति, आयतन, गति आदि के बारे में जानते हैं।

★ चार अक्टोबर १९५७, रूसियों ने जो पहिला स्पूतनिक छोड़ा था, वह ३ जनवरी १९५८ को अग्निगोल बन गया। पहिले उसके दो टुकड़े हुये, फिर उसके आठ टुकड़े हो गये। इसका स्पूतनिक १४ अप्रैल, १९५८ में ब्राजील के ऊपर से, अट्लान्टिक समुद्र में से जा रहा था, तो वह विघटित हो गया। यद्यपि इन क्रित्रिम उल्काओं का परिशोध अभी ही प्रारम्भ हुआ है, तो भी इनके द्वारा, उल्काओं के बारे में कितनी ही बातें जानी जा चुकी हैं।

★ जो अग्निगोल जल जलाकर रह जाते हैं, उनके टुकड़े कई परिमाण के होते हैं। सिखोटी अलन नामक अग्निगोल, टुकड़ों में सब से बड़ा है। १७४५ किलोग्राम इसका भार है। अमरीका में ६० टन भारी "मिटियरेट" गिरा। लान्टा आपर्लेन्ड में ५६४ किलोग्राम भारी, पत्थर का उल्का गिरा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

दिसम्बर १९६२ :: पारितोषिक १०)
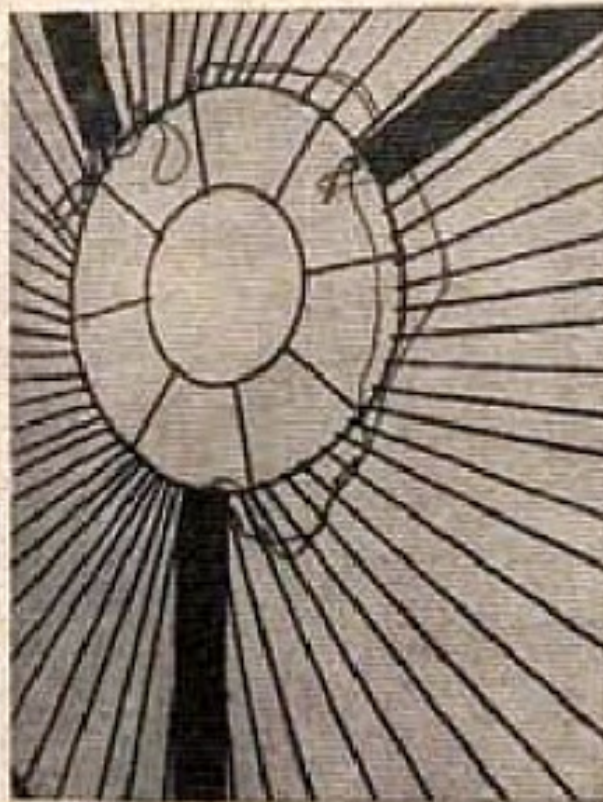
कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ अक्तूबर १९६२ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

अक्तूबर – प्रतियोगिता – फल

अक्तूबर के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।
इनके प्रेषक को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : **भोजन से पहले स्नान करो !**
दूसरा फ़ोटो : **नहीं भाई, पहले पेट भरो !!**

प्रेषक : **प्रेमकुमार सिन्हा,**
१७/७ ओलाई चाण्डी रोड, मधुनपाड़ा, पो. बेलगोधिया, कलकत्ता - ३७

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by B. VENUGOPAL REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

LUX
LUX
LUX
LUX
LUX